मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित वर्ग-संघर्ष

MITHILESHWAR KRIT UPNYAS YAH ANT NAHI ME ABHIVYANJIT VARG SANGHARSH

Submitted to

LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY

In partial fulfillment of the requirements for the award of degree of

MASTER OF PHILOSOPHY (M.Phil.) IN HINDI

Submitted By
Bhawna Grover

Regd. No. 11512212

Department Of Hindi

Lovely Professional University

Supervised By
Dr. Vinod Kumar

Department Of Hindi

Lovely Professional University

FACULTY OF ARTS & LANGUAGES

LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY, PUNJAB

2016

घोषणा-पत्र

मैं भावना ग्रोवर घोषणा करता/ करती हूँ कि मैने 'मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित वर्ग संघर्ष' विषय पर लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब) के अन्तर्गत हिन्दी विषय की एम.फिल.की उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत्त लघु शोध-प्रबन्ध डॉ. विनोद कुमार, असिस्टेंट प्रोफ़ैसर, स्कूल ऑफ़ आर्टस एंड लैंग्वेजेज़, लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब) के निर्देशन में स्वयं पूर्ण किया है तथा यह मेरा मैलिक कार्य है।

मैं यह भी घोषणा करता / करती हूँ कि मेरे द्वारा प्रस्तुत्त यह लघु शोध-प्रबन्ध आंशिक अथवा पूर्ण रूप से किसी अन्य उपाधि के लिए अन्य किसी विश्वविद्यालय को प्रस्तुत्त नहीं किया गया है।

दिनांक. 28-11-2016

नाम-भावना ग्रोवर
रजि-11512212
एम. फ़िल. (हिन्दी)

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री/ श्री भावना ग्रोवर ने 'मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित वर्ग संघर्ष' विषय पर लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब) के अन्तर्गत हिन्दी विषय की एम.फिल.की उपाधि आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत्त लघु शोध-प्रबन्ध मेरे निर्देशन में स्वयं पूर्ण किया है। तथा जो इनका मैलिक कार्य है। मेरे संज्ञान में यह लघु शोध-प्रबन्ध आंशिक अथवा पूर्ण रूप से किसी अन्य उपाधि के लिए अन्य किसी विश्वविद्यालय को प्रस्तुत्त नहीं किया गया है।

मैं प्रस्तुत्त लघु शोध-प्रबन्ध को एम. फ़िल.(हिन्दी) की उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु मुल्यांकनार्थ प्रस्तुत्त करने की संतुति प्रदान करता हूँ।

दिनांक. 28-11-2016

डॉ. विनोद कुमार (17203)
असिस्टेंट प्रोफ़ैसर,
स्कूल ऑफ़ आर्टस एंड लैंग्वेजेज़,
लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब)

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित वर्ग-संघर्ष

प्राक्कथन

जब से मनुष्य का जन्म हुआ है तब से ही निरंतर संघर्ष चलते आ रहे हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसको समाज मे रहते हुए बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। समाज में जब जाति-पाति या धर्म आदि की बात होती है, तो संघर्ष निरंतर होता ही है। जब समाज में रहते हुए भी अपने अधिकारों की प्राप्ति नहीं हो पाती तब भी संघर्ष होता है। संघर्ष स्वाभाविक रूप से हर क्षेत्र मे देखने को मिलता है, चाहे वो आर्थिक संघर्ष हो या सामाजिक। जब से संसार की उत्पति हुई है तब से ही संघर्ष का बोलबाला आरंभ हो गया था। मनुष्य और संघर्ष परस्पर साथ ही चलते है। संघर्ष मनुष्य की मूल भावना है, जिसमें अस्वीकार की प्रवृति मुख्य रूप से रहती है। संघर्ष के लिए अंग्रेजी में conflict, struggle आदि शब्द प्रयुक्त हुए है। अत: संघर्ष द्वंद्व है या प्रतिकूल वातावरण में प्रत्येक मानव मन का वैचारिक एवं वैकारिक प्रतिक्रिया है। मनुष्य का जीवन संघर्षमयी है। हरेक क्षेत्र में मनुष्य को संघर्ष करना ही पड़ता है बिना संघर्ष किए वह अपनी मंजिल को प्राप्त नहीं कर पाता। श्री देवेन्द्र इस्सर के अनुसार सृजन और संहार की शक्तियां प्रत्येक युग में परस्पर संघर्ष में रही हैं और इसमें निरंतर प्रगति भी होती रही है। जाहिर है कि संघर्ष समाज को विकास कि तरफ ले जाता है। यह संघर्ष साहित्यिक स्तर की भी बुनियाद है,जो समाज एवं साहित्य के बीच मिलन सेतु है। संघर्ष शुरू से दो वर्गो में चलता आ रहा है। विज्ञान की प्रगति ने ओद्योगिक क्रान्ति मचा दी। जनता शिक्षित होने लगी। समाज का एक बड़ा हिस्सा आधुनिक बन गया। धर्म, वंश, पंथ, भाषा भेद के आधार पर समाज में अनेक समूह बनते है, लेकिन इनमें समाज शास्त्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है- उत्पादन संबंधो और संपति विभाजन के आधार पर निश्चित होने वाला समूह। सामाजिक प्रगति के लिए कारणभूत होने वाली एक मूलभूत शक्ति है- उत्पादन प्रणाली का विकास। जैसे-जैसे भौतिक प्रगति के कारण, उत्पादन साधनों में बदलाव होता है, वैसे-वैसे वर्ग संबंधो का स्वरूप बदलता रहता है। वर्ग की परिभाषा करते समय विचारकों ने भिन्न-भिन्न कसौटियों को अपनाया है। मारिस गिंसबर्ग जैसे विख्यात समाजशास्त्रीय के अनुसार, आधुनिक समाज में समान उतराधिकार, व्यवसाय निकटता, संपति और शिक्षा के आधार पर जिन समूहों के रहन-सहन, मनोवृति, भावना और विचारों में समानता होती है तथा इनमे से सभी या कुछ कारणों से आपसी व्यवहार में जो समानता दिखाई देती है, इससे उन्हें एक ही समूह की इकाई होने का पूरा विश्वास करता है ऐसे ही समूहों को वर्ग कहा है। संघर्ष किसी भी प्रकार का हो सकता है चाहे वह धर्म के, जाति के, वर्ग के, लिंग के, या फिर नस्ल के आधार पर हो। लेकिन इन सब संघर्षो में से वर्ग संघर्ष भी अपनी निरंतर सीमा पकड़ता जा रहा है। वर्ग

संघर्ष के अंतर्गत एक वर्ग लगातार दूसरे वर्ग का शोषण करता आ रहा है। भिन्न-भिन्न वर्गो में होने वाला पारस्परिक संघर्ष जिसमे दूसरे वर्ग को दबाने या नष्ट करने का प्रयत्न हो, इसके अंतर्गत ही आता है। अंग्रेजी मे इसके लिए (class struggle) शब्द का प्रयोग किया गया है। वर्ग-संघर्ष मार्क्सवादी विचारधारा का प्रमुख तत्व है। मार्क्सवाद मानव सभ्यता और समाज को हमेशा से ही दो वर्गो- शोषक तथा शोषित में विभाजित मानता है। फ्रेडरिक एंगेल्स ने अपनी पुस्तक, 'समाजवाद, वैज्ञानिक और काल्पनिक' में आर्थिक कारणों को ही वर्ग-संघर्ष-सिद्धांत के आधारभूत सिद्धांत के रूप में अपनाया है। वे लिखते है- आदिम समाजवाद को छोड़कर मानव जाति का सारा अतीत इतिहास वर्ग-संघर्ष का इतिहास है। एक वर्ग वो है, जिसके पास साधनों का स्वामित्व है और दूसरा वर्ग वो है,जो केवल शारीरिक श्रम करता है। मार्क्स के अनुसार समाज के शोषक और शोषित- ये दो वर्ग सदा ही आपस मे संघर्षरत रहे हैं और इनमे समझौता कभी संभव नहीं है। वर्गहीन समाज (साम्यवाद) की स्थापना के लिए वर्ग संघर्ष एक अनिवार्य और निवारणात्मक प्रक्रिया है। डॉ॰ जनेश्वर वर्मा ने वर्ग संघर्ष के लिए आर्थिक परिस्थितिओं के ज़िम्मेवार होने के संबंध मे कहा है- कि "सामाजिक परिस्थितियां उत्पादन के ढंग अथवा आर्थिक परिस्थितिओं द्वारा निर्धारित होती है। आर्थिक परिस्थितियां ही समाज में विभिन्न श्रेणियों और उनके संघर्ष के स्वरूप को निर्धारित करती है।"

साहित्यकार समाज में रहकर ही अपने साहित्य का सृजन करता है। समाज का कोई भी पहलू चाहे वह अच्छा है या बुरा उसकी आंखो से ओझल नहीं हो सकता। वह अपने भावों को लेखनी के माध्यम से जनसाधारण तक अवश्य ही पहुंचाता है, जो समस्याएं समाज में रहते हुए उसे प्रभावित करती हैं, वह समाज की समस्याओं से भली-भांति परिचित होता है। इन साहित्यकारों ने सामाजिक विघटन, मानवीय मूल्यों की गिरावट, आर्थिक विषमताओं के प्रति आक्रोश को ही अपनी लेखनी का रूप दिया है। इनका मंतव्य समाज की विसंगतियो को जनसाधारण के समक्ष लाना रहा है। हिन्दी साहित्य जगत में भी बहुत से ऐसे साहित्यकार हुए हैं, जिन्होंने वर्ग संघर्ष की समस्या को अपने साहित्य के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। वर्ग संघर्ष की समस्या एक ऐसी समस्या है, जिसने सभी साहित्यकारों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। मुंशी प्रेमचंद, नागार्जुन, अयोध्या सिंह उपाध्याय, राम विलास शर्मा, भैरव प्रसाद गुप्त, जगदीश चंद्र, रांगेय राघव, रेणु ऐसे ही साहित्यकार है, जिन्होंने आधुनिक युग की समस्याओं को अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है।

इन सभी साहित्यकारों की दृष्टि एवं रचनागत उद्देश्य एक ऐसे समाज की संकल्पना है जिसमें विषमता को समाप्त कर समता की स्थापना हो क्योंकि यदि उत्पादन पद्धतियों की असमान व्यवस्था के स्थान पर समानता सहयोग सदभाव और विचार विनिमय का समावेश हो जाए तो वर्ग संघर्ष की कोई संभावना ही नहीं रहेगी। तब आर्थिक समानतामूलक समाज व्यवस्था

की स्थापना होगी। अर्थात सामाजिक व्यवस्था के स्थित आंतरिक वैमनस्यता को वर्ग संघर्ष के ही माध्यम से प्रकट किया जा सकता है। लोगों के मन मे एक दूसरे के प्रति आक्रोश, घृणा पहले भी थी आज भी है। इन्हीं विसंगतियो को आधुनिक साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया है। मिथिलेश्वर भी साहित्यकारों की उसी शृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। जिन्होंने वर्ग- संघर्ष की इस परंपरा को अपनी कलम से आगे बढ़ाया है। हम कह सकते हैं कि मिथिलेश्वर जी के काव्य में वर्तमान समाज में व्याप्त संघर्ष का विशद विवेचन-विश्लेषण मिलता है। संघर्ष कोई नवीन परंपरा नहीं है अपितु युग-युगान्तरों से चली आ रही परिवर्तनशील परंपरा है। इसी से जीवन का एक नया रूप उभर कर समाज के सम्मुख प्रकट होता है।

प्रस्तुत शोध कार्य को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय 'सैद्धांतिक पृष्ठभूमि' में शोध कार्य का समस्या कथन, समस्या का औचित्य, शोध कार्य के उद्देश्य, परिकल्पना, शोध के लिए प्रयुक्त होने वाली प्रविधियों के साथ-साथ पूर्व सम्बद्ध साहित्य पर भी प्रकाश डाला जाएगा। इसके साथ ही जो सिद्धान्त लिया गया है उसका अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, प्रकार और संबन्धित लेखक के व्यक्तित्व और कृतित्व पर भी प्रकाश डाला जाएगा।

द्वितीय अध्याय 'मिथिलेश्वर कृत उपन्यास यह अंत नहीं में सामाजिक संघर्ष' में समाज में पारिवारिक विखंडन, उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग का शोषण, नारी की समाज में दयनीय स्थिति, शोषितों पर हो रहे अत्याचारों के प्रति साहित्यकार के संघर्ष को उजागर किया जाएगा।

तृतीय अध्याय 'मिथिलेश्वर कृत उपन्यास यह अंत नहीं में आर्थिक संघर्ष' में अर्थ की महत्ता के कारण समाज में व्याप्त आर्थिक असमानता और उसके कारण शोषित वर्ग पर हो रहे शोषण को उजागर किया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय 'मिथिलेश्वर कृत उपन्यास यह अंत नहीं में राजनीतिक संघर्ष' में राजनीति के भ्रष्ट रूप को प्रस्तुत किया जाएगा और साथ ही ढोंगी नेताओं की अवसरवादिता नीति को भी अभिव्यक्त किया जाएगा।

पंचम अध्याय 'मिथिलेश्वर कृत उपन्यास यह अंत नहीं में धार्मिक संघर्ष' में समाज में शुरू चली आ रही प्राचीन परम्पराएं तथा लोगों के मनों में जो अंधविश्वास चले आ रहे है उनके प्रति साहित्यकार द्वारा संघर्ष को उजागर किया जाएगा।

षष्ठ अध्याय उपसंहार का है जिसमें शोध कार्य से प्राप्त तथ्यों को रेखांकित किया गया है। मिथिलेश्वर जी के उपन्यास के आधार पर कहा जा सकता है कि मानव जीवन में द्वंद और संघर्ष का क्रम निरंतर प्रवर्तित होता रहता है। उनके उपन्यासों में सामाजिक, आर्थिक,

राजनीतिक, धार्मिक संघर्ष पाये जाते है। मिथिलेश्वर जी इस उपन्यास में प्रयुक्त संघर्षात्मक भावों को शब्दों एवं वाक्यों के माध्यम से प्रभावशाली रूप से उभारने में समर्थ हुए हैं।

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन

अध्याय एक : सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

1.1 समस्या कथन

1.2 समस्या औचित्य

1.3 शोध के उद्देश्य

1.4 परिसीमांकन

1.5 परिकल्पना

1.6 शोध प्रविधि

1.7 पूर्व संबंद्ध साहित्यावलोकन

1.8 वर्ग संघर्ष की सैद्धांतिक अवधारणा

1.8.1 अर्थ, परिभाषा एवं ऐतिहासिक परंपरा

1.8.2 विविध रूप अथवा प्रकार

1.8.3 साहित्य और वर्ग संघर्ष

1.8.4 वर्ग संघर्ष की परंपरा और साहित्य

1.8.5 हिन्दी उपन्यास और वर्ग संघर्ष

1.9 मिथिलेश्वर जी का व्यक्तित्व और कृतित्व

1.9.1 जन्म, शिक्षा

अध्याय दो –

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित सामाजिक संघर्ष

2.1 पारिवारिक स्थिति

2.2 मज़दूरों का शोषण

2.3 नारी की स्थिति

2.4 शोषित वर्ग पर होने वाले अत्याचार

अध्याय तीन –

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित आर्थिक संघर्ष

3.1 गरीब जनता की स्थिति

3.2 बेरोज़गारी की समस्या

3.3 लूटपाट से आवश्यकता पूर्ति

अध्याय चार –

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित राजनीतिक संघर्ष

4.1 अवसरवादी व्यवस्था

4.2 भ्रष्टाचार का विक्राल स्वरूप

अध्याय पाँच –

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित धार्मिक संघर्ष

5.1 अंधविश्वास की शृंखलाएं

5.2 प्राचीन परंपराओं का स्वरूप

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

अध्याय एक : सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

समस्या कथन

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित वर्ग-संघर्ष

संघर्ष अपने आप में एक बड़ी समस्या है। साधारण शब्दो में संघर्ष मनुष्य के जन्म के साथ ही शुरू हो जाता है। जब समाज में रहते हुए भी अपने आधिकारों की प्राप्ति नहीं हो पाती तो मन में संघर्ष की भावना उत्पन्न होती है। इसी कारण सामाजिक विसंगतियो, राजनीतिक कुरीतियों, आर्थिक असमानता को लेकर व्यक्ति संघर्ष करता है। आज मनुष्य को प्रत्येक क्षेत्र में संघर्ष करना पड़ता है। संघर्ष करके ही वह अपनी मंजिल को प्राप्त कर सकता है। पर सब संघर्षो में से वर्ग-संघर्ष अपनी निरंतर सीमा पकड़ता जा रहा है। यह शुरू से ही दो वर्गो में होता आ रहा है। एक वर्ग के मन में दूसरे वर्ग के प्रति बदले की भावना जागृत होती है इन दोनों वर्गो में समझौता कभी भी संभव नहीं है। इसी प्रकार मिथिलेश्वर जी भी इसी ही कोटि के साहित्यकार है जिन्होनें अपने उपन्यास 'यह अंत नहीं' में वर्ग-संघर्ष के भिन्न-भिन्न पहलूओं का वर्णन किया है। इस प्रकार मिथिलेश्वर जी इस कसौटी पर खरे उतरते है।

शोध समस्या का औचित्य

अगर हम सही शब्दो में समाज में साकारात्मक बदलाव चाहते है तो हमे खुद ऐसे मुद्दे उठाने चाहिए जो पूर्णत: सामाजिक बदलाव में सहायक हो। हमारे देश में शुरू से ही उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग के प्रति द्वैतभाव रखता है। वह उनके प्रति बुरी सोच रखते है। उनको समाज में समान दर्जे से नहीं देखा जाता। वर्ग के आधार पर ही उनको प्रताड़ित किया जाता है। इन सब के पीछे मनुष्य की ही सोच है। यदि हम अपनी सोच को साकारात्मक रूप दे सके तो समाज में सब कुछ ठीक हो सकता है। हमारे शोध कार्य का महत्वपूर्ण औचित्य यही है कि समाज के लोगों को वर्ग- संघर्ष की समस्या के प्रति कैसे जागरूक करवाया जा सके। इस समस्या का समाधान करने हेतु हमे सबसे पहले मुख्य कारणों की पहचान करनी आवश्यक है जिसके द्वारा आने वाले शिक्षकों तथा समाज के लोगों के लिए यह शोध कार्य सहायक बन सके।

शोध के उद्देश्य

प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी लक्ष्य या उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मानव किसी कार्य को अंजाम देता है। मनुष्य के सभी कार्य किसी न किसी उद्देश्य से होते है। पशु-पक्षी भी बिना किसी उद्देश्य के कोई गतिविधि नहीं करते फिर समाज का सर्वश्रेष्ठ प्राणी, मनुष्य और उन मनुष्यों में भी साहित्यकार बिना किसी उद्देश्य के कोई काम क्यों करने लगा? किसी भी कार्य को करने के लिए उद्देश्य सीढ़ियो का काम करते हैं। उद्देश्य के अभाव में मनुष्य अपने कार्य तक नहीं पहुंच पाता तथा रास्ते में ही भटक जाता है। उद्देश्य के द्वारा मनुष्य यह निश्चित कर लेता है कि उसने अमुक कार्य को पूरा करना है।

1. समाज में वर्ग संघर्ष की समस्या को प्रस्तुत करना :

इस शोध कार्य का सबसे पहला उद्देश्य समाज में वर्ग-संघर्ष की जो समस्या चली आ रही है उसको प्रस्तुत करना है। समाज में दो वर्गो का आपसी समझौता कभी भी संभव नहीं है। यह दोनों वर्ग उच्च तथा निम्न आपस में संघर्षरत रहे है। उच्च वर्ग के द्वारा निम्न वर्ग का निरंतर शोषण होता है तथा उनको दबाने की कोशिश हमेशा ही जारी रहती है। बड़े बड़े दावों और साम्यवाद के मंचीय नारों के बावजूद वर्ग- वैषम्य और वर्ग- संघर्ष की यह खाई भरने का नाम नहीं ले रही। इस वास्तविकता को अपने इतिहास में झांककर और वर्तमान का आकलन कर स्पष्ट करना शोध का उद्देश्य रहेगा।

2. अर्थ के कारण अर्थहीन होते जा रहे सम्बन्धों को उद्घाटित करना :

इस शोध कार्य का यह भी उद्देश्य है कि आज के युग में अर्थ ही ज्यादा महत्ता रखता है और व्यक्ति की कोई एहमियत नहीं रह गयी है। आपसी संबंध भी व्यक्ति कि आर्थिक स्थिति को देख कर ही स्थापित किये जाते है। सभी पैसे की दौड़ में एक दूसरे से आगे निकलने की चाह में फंसे हुए है। आपसी संबंधो के टूटने का सबसे बड़ा कारण अर्थ ही बन रहा है।

3. हिन्दी उपन्यास साहित्य में अभिव्यंजित वर्ग- संघर्ष के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत करना:

हिन्दी साहित्य में बहुत से ऐसे उपन्यासकार है, जिन्होने अपने उपन्यासों के माध्यम से वर्ग संघर्ष के विभिन्न पक्षों को अपनी लेखनी का रूप देकर प्रस्तुत किया है। हिन्दी

उपन्यासों में अभिव्यंजित वर्ग- संघर्ष के सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, राजनैतिक आदि पक्षों को प्रस्तुत करना भी इस शोध का उद्देश्य है।

4. मिथिलेश्वर कृत उपन्यास में पूंजीवादी वर्ग की शोषण वृतियों को प्रस्तुत करना :

इस शोध कार्य का एक अन्य उद्देश्य पूंजीवादी वर्ग की शोषण वृतियों को प्रस्तुत करना है। पूंजीपति वर्ग शुरू से ही मजदूर वर्ग का शोषण करता आ रहा है। पूंजीवादी मुनाफाखोरी प्रवृति के कारण मज़दूरों को दो वक्त की रोटी जुटाने के लिए अतिरिक्त श्रम करने पर मजबूर किया जाता है तथा उनको उनकी मेहनत का पूरा वेतन भी नहीं दिया जाता। उनका निरंतर शोषण किया जाता है तथा उन पर बहुत से अत्याचार भी किये जाते है। मिथिलेश्वर ने अपने साहित्य में इन स्थितियों को चित्रण किस प्रकार किया है इसे सामने लाना भी इस शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य है।

5. वर्ग- संघर्ष के संदर्भ में साहित्यकार मिथिलेश्वर के अवदान को निर्धारित करना :

हिन्दी साहित्य के बहुत से साहित्यकारों ने अपनी-अपनी भूमिका निभायी है। बहुत से साहित्यकार है जैसे- मुंशी प्रेमचंद, रेणु, रांगेय राघव, नागार्जुन आदि, जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से अपना योगदान दिया है। आधुनिक साहित्यकार मिथिलेश्वर जी ने अपने साहित्य के माध्यम से वर्ग- संघर्ष की समस्या को किस ढंग से प्रस्तुत किया है। और उनके द्वारा इस वर्ग- संघर्ष को आगे बढ़ाने में क्या और कितना अवदान है इस तथ्य को स्पष्ट करना भी इस शोध का उद्देश्य है।

परिकल्पना

परिकल्पना अंग्रेजी के शब्द हाइपोथिसिस (hypothesis) का हिन्दी अनुवाद है, जिसका अर्थ होता है- विचार या सिद्धांत का पूर्व कथन। अर्थात जिस बात की बहुत कुछ संभावना हो उसे पहले ही मान लेना या उसके नाम, रूप आदि की कल्पना कर लेना। इस प्रकार परिकल्पना शब्द का शाब्दिक अर्थ है- पूर्ण चिंतन।

1. समकालीन सामाजिक परिस्थितिओं को मूल में रख कर बात की गयी है :

इस शोध कार्य में आधुनिक समाज की परिस्थितिओं को मूल में रख कर बात की गयी है। समाज में उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग की जो समस्या चली आ रही है उसको बयान किया है। आज भी उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग के लोगों से घृणा करते है। उनको दर्जा उनके वर्ग के आधार पर ही दिया जाता है। साहित्यकार समाज की समस्याओं से भली-भांति परिचित होते है।

2. आर्थिक असमानता को प्रस्तुत किया गया है :

इस शोध कार्य के द्वारा आर्थिक असमानता को प्रस्तुत किया गया है। अर्थ की महत्ता ज्यादा बढ़ती जा रही है। आपसी संबंध भी व्यक्ति की आर्थिक स्थिति को देख कर ही स्थापित किया जाता है। इसी असमानता के कारण ही निम्न वर्ग का सामाजिक स्तर गिरता जा रहा है। गरीब व्यक्ति ओर गरीब होता जा रहा है।

3. हिन्दी उपन्यास साहित्य में वर्ग- संघर्ष के भिन्न-भिन्न पहलूओं की जानकारी प्रस्तुत की गयी है:

हिन्दी उपन्यास साहित्य में बहुत से साहित्यकार ऐसे हुए है जिन्होने वर्ग-संघर्ष के भिन्न-भिन्न पहलूओं जैसे कि आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक को प्रस्तुत किया गया है।

4. पूंजीवादी वर्ग की शोषण वृतियों को उद्घाटित किया गया है :

इस शोध कार्य में पूंजीवादी वर्ग की शोषण वृतियों को उद्घाटित किया गया है। पूंजीपति वर्ग शुरू से ही मजदूर वर्ग का शोषण करता आ रहा है, उन पर बहुत से अत्याचार किये जाते है। पूंजीपति वर्ग मजदूर वर्ग से अधिक से अधिक काम करवाता है तथा उनकी मेहनत का पूरा वेतन भी उनको नहीं देते।

5. वर्ग- संघर्ष के संदर्भ में साहित्यकार मिथिलेश्वर के अवदान को निर्धारित किया गया है :

इस शोध कार्य में समय के अनुसार हिन्दी उपन्यासों में परिवर्तन आता दिखाया गया है। हिन्दी साहित्य में बहुत से साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों में वर्ग- संघर्ष की समस्या को प्रस्तुत किया गया है। परंतु आधुनिक साहित्यकार मिथिलेश्वर जी ने सामाजिक विसंगतियों को केंद्र में रख कर अपने साहित्य को नई दिशा प्रदान की है।

शोध प्रविधि

शोध कार्य की सफलता, सार्थकता एवं गुणवत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि शोधार्थी ने इसके लिए उपयुक्त शोध प्रविधि का उपयोग किया है अथवा नहीं क्योकि यदि शोध कार्य अथवा समस्या- समाधान के लिए उपर्युक्त शोध प्रविधि का उपयोग न हो तो परिणामों की प्राप्ति की संभावना कम हो सकती है और विश्वसनीयता में भी कमी रहती है। इसलिए प्रस्तुत शोध-कार्य के लिए भी संभावित शोध-प्रविधियों की पहचान की गयी है। हम न तो किसी एक विधि से सभी कार्य कर सकते है और न ही किसी एक कार्य में सभी विधियों का इस्तेमाल कर सकते है।

1. समाजशास्त्रीय प्रविधि :

समाज का साहित्य से घनिष्ठ संबंध है। जो भी कथा लिखी जाती है उस पर समाज का प्रभाव अवश्य ही पड़ता है। समाजशास्त्रीय प्रविधि के अंतर्गत किसी भी साहित्यिक कृति में समाज के किस अंग को प्रस्तुत किया गया है उसका वर्णन किया जाता है। समाज के विभिन्न अंगों को आधार बना कर कार्य किया गया है इसी लिए समाजशास्त्रीय प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

2. मनोवैज्ञानिक प्रविधि :

जैसे की हम सब को मालूम है कि मनोविज्ञान को मन का विज्ञान कहा जाता है। मनोवैज्ञानिक प्रविधि के अंतर्गत लेखक की मनोस्थिति और उसकी मनोस्थिति के आधार पर कृति के पात्रों की मनोस्थिति का अध्ययन किया जाता है। मनोवैज्ञानिक प्रविधि भी बहुत ही महत्वपूर्ण है। विभिन्न पात्रों की मनोस्थिति का वर्णन किया गया है इसी लिए इस प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

3. ऐतिहासिक प्रविधि :

समाज एक गतिशील व्यवस्था है, इसमे निरंतर परिवर्तन होते रहते है। ऐसी स्थिति में समाज की संरचना और प्रकार्यों को ठीक से समझने के लिए इसमे हो रहे परिवर्तनों को समझना भी आवश्यक है। ऐतिहासिक तथ्यो और घटनाओं को आधार बनाकर आधुनिक चीज़ों को समझना सहज हो जाता है। इसी लिए ऐतिहासिक प्रविधि भी बहुत महत्वपूर्ण है।

4. समस्यामूलक प्रविधि :

यह प्रविधि भी बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस प्रविधि के अंतर्गत हम सबसे पहले यह ज्ञात करेगें की कौन सी समस्या प्रधान है। फिर उसके पश्चात समस्या के कारणों को जानेगें। इसमे सबसे ज्यादा फोकस समस्या पर ही होता है। इसमे वर्ग-संघर्ष की समस्या प्रमुख है इसी लिए हमने समस्यामूलक प्रविधि का प्रयोग किया है।

पूर्व सम्बद्ध साहित्य अवलोकन

1. डॉ. कुंवरपाल, 'मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र और हिन्दी उपन्यास', दिल्ली, 2005:

इस पुस्तक में कुंवरपाल जी ने मार्क्सवाद के सौंदर्यशास्त्र का उल्लेख हिन्दी के विभिन्न उपन्यासों के माध्यम से किया है।

2. शिव कुमार मिश्र 'मार्क्सवाद और साहित्य', नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2001:

इस पुस्तक में शिव कुमार मिश्र जी ने मार्क्सवाद और साहित्य को एक ही नज़र से देखा हैं। साहित्य में मार्क्सवाद की समस्या को साहित्य में किस प्रकार अंकित किया गया है उसका वर्णन इस पुस्तक में मिलता है।

3. ओमप्रकाश सिंह, 'प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्य और सांप्रदायिक समस्याएं', नई दिल्ली, नमन प्रकाशन,1998 :

इस पुस्तक में ओमप्रकाश जी ने प्रेमचंद कथा साहित्य के माध्यम से अलग-अलग संप्रदाय में जो गम्भीर समस्याएं चल रही थी उनका विवरण किया है।

4. मार्क्स-एंगेल्स, ' कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र ', मास्को प्रगति प्रकाशन,1986_:

इस पुस्तक में कार्ल मार्क्स और एंगेल्स ने कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणा पत्र की बारे में बताया है जिसमें साम्यवाद की स्थापना पर बल दिया गया है। इस पुस्तक में वर्ग- संघर्ष के बारे में बताया गया है। कार्ल मार्क्स के अनुसार जब तक आर्थिक क्षेत्र में वर्ग- संघर्ष चलता रहेगा और अमीर और गरीब में आर्थिक असमानता रहेगी तब तक पूँजीपति और मज़दूर वर्ग में संघर्ष चलता रहेगा।

5. अयोध्या सिंह, 'समाजवाद – भारतीय जनता का संघर्ष', कलकता, लोकभारती प्रकाशन, 1971:

इस पुस्तक में अयोध्या सिंह जी ने समाजवाद को लेकर भारतीय जनता के संघर्ष का वर्णन किया है। उनका कहना है कि समाज में सभी को एक समान दर्जा दिया जाये तो किसी प्रकार का संघर्ष नहीं हो सकता।

6. विमल खंडेकर, 'स्वतंत्रोतर हिंदी और मराठी उपन्यासों में वर्गीय एवं जातीय संघर्ष', (पी. एच. डी. की उपाधि के लिए), जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, 2014 :

इस थीसिस में हिन्दी और मराठी के उपन्यासों में वर्गीय एवं जातीय संघर्ष का उल्लेख किया है। पहले वर्ग और जाति का स्वरूप बताया है तथा अनेक साहित्यकारों के माध्यम से अलग-अलग उपन्यासों द्वारा इस संघर्ष का वर्णन किया है। प्रेमचंद, रांगेय राघव जी के उपन्यासों के माध्यम से इसका अंकन किया है।

7. सिन्ह संध्या, 'निराला के काव्य का राजनीतिक संघर्ष', ज्वाहरलाल नेहरू विश्वववविद्यालय, 2014 :

इस थीसिस में निराला जी की कविताओं के माध्यम से राजनीतिक संघर्ष का वर्णन किया है। उनकी कविताओं को आधार बनाकर समाज में, राजनीति में किसानों तथा मजदूरो की जो दयनीय दशा है उसको अंकित किया है। किस प्रकार राजनेता निम्न वर्ग से बड़े- बड़े वादे करते है परंतु मतलब निकल जाने के बाद उन सब वादों को भूल जाते है

8. इंगले जालिन्दर, 'समकालीन हिन्दी उपन्यासों में वर्ग एवं वर्ण संघर्ष', डॉ. बाबासाहब अंबेडकर मराठवाडा, विश्वविद्यालय, 2007 :

इस थीसिस में समकालीन हिन्दी उपन्यासों के माध्यम से समाज में वर्गो तथा वर्णो के आधार पर जो संघर्ष चलता आ रहा है उसका वर्णन किया है। प्राचीन काल से ही लोगों के मनों में यह अवधारणा बन कर रह गयी है कि लोग एक दूसरे से संबंध भी वर्ग तथा वर्ण को देख कर ही बनाते है। अलग- अलग उपन्यासों को आधार बना कर यह बताया गया है कि समाज में निम्न जाति के लोगों कि दशा कितनी दयनीय है।

9. रमेश चंद्र, 'कथाकार यशपाल के कथा साहित्य में संघर्ष चेतना के विविध आयाम', हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, 2014 :

इस थीसिस में यशपाल जी के कथा साहित्य में संघर्ष चेतना के विविध आयाम जैसे- सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक को आधार बनाकर रचनाएं की गयी है। उन्होने इसमे नारी, युवा वर्ग, निम्न वर्ग की समाज में जो दशा है उसको अंकित किया है।

10. वंदना हीरेकर, 'स्वतंत्र्योतर हिन्दी कहानी में नारी संघर्ष', हैदराबाद विश्वविद्यालय, 2011 :

इस थीसिस के माध्यम से यह बताया गया है कि नारी का सारा का सारा जीवन संघर्षमयी है। अलग-अलग साहित्यकारों की कहानियों को आधार बना कर समाज में प्राचीन काल से ले कर आधुनिक काल तक जो दशा थी उसका वर्णन किया गया है।शुरू से लेकर आज तक नारी अपने हक़ की प्राप्ति के लिए संघर्ष करती आयी है।

11. सुनीता, 'मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी की संघर्ष यात्रा', (पी.एच.डी. की उपाधि के लिए), श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल विश्वविद्यालय, 2013 :

इस थीसिस में मुंशी प्रेमचंद जी के उपन्यासों के माध्यम से नारी के वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक की संघर्ष यात्रा का वर्णन किया है। नारी की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक पक्ष पर समाज में जो दयनीय दशा है उसका वर्णन किया है। इसमे जे दर्शाया गया है कि नारी कही भी चली जाए उसको सब जगह मुसीबतों का सामना करना ही पड़ेगा।

12. रामविलास शर्मा, 'मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य', दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2002:

इस पुस्तक में रामविलास जी ने मार्क्सवादी विचारधारा को प्रस्तुत किया गया है। इसमें मार्क्स के पूंजीपति वर्ग और मज़दूर वर्ग से संबन्धित जो विचार है उनको प्रस्तुत किया है।

13. डॉ. आशुतोष राय, 'नागार्जुन का गद्य साहित्य', दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2006 :-

इस पुस्तक में नागार्जुन जी की रचनाओं के माध्यम से समाज में मज़दूर या किसान वर्ग की जो दयनीय दशा है उसको दर्शाया गया है। निम्न वर्ग कि स्थिति इतनी दयनीय बन कर रह गयी है कि समाज में उसको उच्च वर्ग द्वारा प्रताड़ित किया जाता है। प्रेमचंद जी की तरह इनके गद्य साहित्य में पूंजीवाद से उपजी वे सारी समस्याएं प्रतिभूत है जो आज भी किसी न किसी रूप में हमारे सामने मौजूद है।

14. ममता जेतली तथा श्री प्रकाश शर्मा, 'आधी आबादी का संघर्ष', नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन 2006 :

इस पुस्तक में स्त्रियों के संघर्ष का वर्णन किया है। इतना काम करने के बावजूद भी स्त्री आधी की आधी ही है। समाज में नारी की दशा इतनी दयनीय बन कर रह गयी है कि पुरुष वर्ग उसको अपने जूते के समान समझने लगा है। उसको समाज में समान दर्जा नहीं मिल पाता।

15. महाश्वेता देवी, 'अग्निगर्भ', दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन,2005 :

इस पुस्तक में देवी जी ने समाज में किसान वर्ग कि जो निम्न दशा है उसका वर्णन किया है। किसान वर्ग को सारा दिन काम करने पर भी पूरा वेतन नहीं मिल पाता। इस पर ही महाश्वेता देवी जी ने रोष अभिव्यक्त किया है,जब तक यह असमानता नहीं हटेगी तब तक निम्न वर्ग की दशा में सुधार नहीं हो सकता।

16. डॉ. सोहन शर्मा, 'भारतीय समाज में वर्ग संघर्ष और हिन्दी उपन्यास', दिल्ली,रचना प्रकाशन, 2011

इस पुस्तक में शर्मा में जी ने हिन्दी उपन्यासों के माध्यम से भारत जैसे विशाल देश में प्राचीन काल से ही जो वर्गो के आधार पर जो भेदभाव किया जाता है उसका वर्णन किया है। शुरू से ही उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग के लोगों से घृणा करते आए है। इन दोनों वर्गो में आपसी समझौता कभी भी संभव नहीं है।

17. केशवदेव शर्मा, 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास और वर्ग- संघर्ष', नई दिल्ली, 1991 :

इस पुस्तक में भी आधुनिक समय के जो उपन्यास है उनको आधार बनाकर वर्ग- संघर्ष की जो

गहरी समस्या है उसको अंकित किया गया है। प्रेमचंद जी के बहुत से उपन्यास ऐसे है जिसमे उच्च तथा निम्न वर्ग वर्ग के लोगों में आपसी टकराव को दर्शाया गया है।

वर्ग- संघर्ष

वर्ग शब्द का अर्थ

किसी भी शब्द की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें सबसे पहले उस शब्द के अर्थ को जान लेना बहुत ही जरूरी है इससे हमें यह ज्ञात हो जाता है कि किस-किस कोश में या किस-किस विद्वान ने उस शब्द के भिन्न-भिन्न अर्थ को स्वीकार किया है। बृहत हिन्दी कोश में 'वर्ग' शब्द का अर्थ निम्नानुसार बताया गया है। वर्ग –पु (सं) स्वजातीय या समान धर्मियों का समूह, एक स्थान से उच्चारित होने वाले वर्णो का समूह, ग्रंथ का विभाग, अध्याय, समान अंको का घात, वह समकोण चतुर्भुज(चौकोण),जिसकी लंबाई-चौड़ाई बराबर हो। शक्ति, अर्थ, धर्म काम आदि त्रिवर्ग। [1]

मानक हिन्दी विशाल कोश के अनुसार वर्ग – पु (सं) वृज (त्याग देना आदि) + धत्र

1. एक ही प्रकार की अथवा बहुत कुछ मिलती-जुलती या सामान्य धर्मवाली वस्तुओं का समूह या श्रेणी। जैसे- औषधिवर्ग, साहित्यिक वर्ग ,विद्यार्थी वर्ग आदि।

2. कुछ विशिष्ट कार्यो के लिए बना हुआ कुछ लोगों का समूह।

3. देवनागरी वर्णमाला में एक स्थान से उच्चारित होने वाले स्पर्श व्यंजन वर्णो का समूह। +जैसे- कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग आदि।

4. कक्षा, जमात

5. ग्रंथ का अध्याय, प्रकरण

6. गणित में समान अंको का घात। [2]

अशोक मानक विशाल कोश में वर्ग शब्द का विस्तारित रूप दिया गया है। जो निम्नानुसार है 'वर्ग' - पु (सं) (वि.वर्गीय)

1. एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह, कोटि, श्रेणी।

2. सामान्य धर्म या स्वरूप रखने वाले पदार्थों का समूह।

3. दो समान अंको या संख्याओं का घात या गुणन फल। [3]

प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में 'वर्ग' का अर्थ समाज द्वारा स्थापित परंतु जिनका आधार 'अर्थ' अर्थात धन, वित्त, पैसा है। वर्ग यह एक आर्थिक संकल्पना है। समाज के आर्थिक जीवन व्यवस्था में विभिन्न वर्ग का स्वरूप निश्चित होता है। वस्तुत: वर्ग यह एक सामाजिक संकल्पना है, यानी सामाजिक व्यवस्था की प्रक्रिया में समाज में रहनेवाले लोगों का जो विभाजन होता है, एवं निश्चित विभिन्न आकार में जो समूह निर्माण होते है उन्हें 'वर्ग' कहते हैं। केवल उत्पादन साधनों का होना या न होना इस पर वर्ग निश्चित नहीं होता।

वर्ग की परिभाषा

मार्क्स तथा एंगेल्स ने अपने लेखन में 'वर्ग' इस संज्ञा पर विचार किया है। उनके अनुसार इतिहास की निर्मित करने वालों को वर्ग कहा जाता है। एंगेल्स कहते है- "विशिष्ट समाज में आर्थिक संबंध, प्रथमत: हीतसंबंध बनकर दृष्टिगोचर होते है।"[4] आज के समाज में अर्थ ही प्रधान बन कर रह चुका है इसी के आधार पर ही लोग एक दूसरे से रिश्ते बनाते है। कार्ल मार्क्स ने राज्यशास्त्र कोश में लिखा है-"अपनी आर्थिक अवस्था को जाननेवाला अपने प्रतिद्वंद्व के संदर्भ में अपने आप को समझने वाला, एक विशिष्ट स्थान पर समाज का भौतिक विकास करने या रोकने की ऐतिहासिक कृति करनेवाला वर्ग होता है।"[5]

वस्तुत: वर्ग का मूल रूप कभी प्राप्त नहीं होता, धीरे-धीरे समाज में वर्ग जागृति व क्रांति करने या क्रांति को रोकने पर वर्ग की निर्मित होती है। स्थूल रूप से समान उत्पादन क्षमता रखने वालों का अन्य लोगों से अलग आर्थिक गुट 'वर्ग' कहलाता है।

प्रा. शरद पाटील लिखते है - "समाज का एक समुदाय दूसरे समुदाय के श्रम का शोषण सहज रूप से करता है वे वर्ग कहलाएं जाते है, जब समाज का एक समुदाय या गुट उद्योग, एवं फैक्टरियो पर अपना अधिकार बताता है, दूसरा केवल श्रम करता है तब बुर्जुआ और सर्वहारा वर्ग निर्माण होते है।"[6] कहा जाता है कि वर्ग निर्मित के बगैर सरकार अथवा सत्ता की निर्मित नहीं होती। पाश्चात्य विचारक लेनिन की दी हुई वर्ग की परिभाषा बिल्कुल

उचित है। उनके अनुसार समाज के एक विभाग द्वारा दूसरे विभाग के श्रम का शोषण करना संभव करते है, वह वर्ग कहलाता है।

जातिव्यवस्था ही वर्गव्यवस्था है। जब तक वर्गव्यवस्था का नाश नहीं होता तब तक जातिव्यवस्था का नाश होना असंभव है। वर्ग एक आर्थिक संकल्पना है। समाज के आर्थिक जीवन में विविध वर्गों का स्वरूप निश्चित होता है और वर्ग- संघर्ष अर्थात आर्थिक शोषण के विरुद्ध किया गया संघर्ष ऐसी कल्पना सामने आती है।

वर्ग- संघर्ष का अर्थ, परिभाषा

वर्ग- संघर्ष की अवधारणा को स्पष्ट करने से पूर्व संघर्ष की परिभाषा,अर्थ को समझ लेना अनिवार्य है।

संघर्ष शब्द का अर्थ

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के बिना मनुष्य का और मनुष्य के बिना समाज का कोई अस्तित्व ही नहीं है। समाज में रह कर ही मनुष्य समाज में चल रही रूढ़ियों, विसंगतियों, धार्मिक आडंबरो, रीति-रिवाजों से अवगत होता है। जो तो बातें उसके हित में होती है उनको तो वह ग्रहण कर लेता है जो अहित में होती है उनका वह विरोध करता है। समाज में रहकर भी जब उसको एक समान दर्जा नहीं मिल पाता तो उसके मन में संघर्ष की भावना उत्पन्न हो जाती है। तो वह अपनी मंजिल को हासिल करने के लिए संघर्ष करता है। संघर्ष शब्द दो शब्दों के जोड़ सम+घर्षण के जोड़ से बना है। संघर्ष का अर्थ विरोध या द्वंद से है, परंतु प्राय: इसका बेमेल अथवा असंगत के समानर्थक रूप में होता रहा है। संघर्ष तब प्रारम्भ होता है जब हितों, ध्येयों, मूल्यो तथा विश्वासों के दो भिन्न समुच्चयों का अस्तित्व होता है। अर्थात "संघर्ष या विरोध उस स्थिति का नाम है जिसमें संबंधो के बेमेल या असंगत हित प्रत्यक्ष होता है।"[7] समय के बदलाव के साथ-साथ जब आम जनता को अपने हितों, अधिकारों के प्रति ज्ञान हुआ तो उन्होनें इसके विरोध में आवाज़ उठाई। मनुष्य को हरेक क्षेत्र में संघर्ष करना ही पड़ता है। मानव संबंधो में संघर्ष सदैव से बनी रहने वाली प्रक्रिया है। संघर्ष करने की आवश्यकता मनुष्य को तब पड़ती है, जब समाज में रहते हुये अपने हितों की प्राप्ति नहीं हो पाती। ग्रीन के अनुसार,"संघर्ष इच्छा शक्ति का एक ऐसा सोचा-समझा प्रयोग है जिसमें विरोध, प्रतिरोध और वाध्यकारी से संबंधित क्रियाएं सम्मिलित है।"[8] वास्तव में

संघर्ष एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें ध्येयों की पूर्ति हेतु विपक्षी के विरुद्ध हिंसा का सहारा लिया जाता है। मानक हिन्दी विशाल कोश में संघर्ष शब्द का अर्थ निम्नानुसार दिया है- "संघर्ष (ण) पु. (सं) रगड़ खाना, प्रतियोगिता, होड़, एक चीज़ की दूसरी चीज़ के साथ होनेवाली रगड़, दो दलों में होनेवाला वह विरोध जिसमें दोनों एक दूसरे को दबाने का प्रयत्न करते है, विकट और विपरीत परिस्थितियों से आगे निकलकर आगे बढ़ने के किए होनेवाला प्रयत्न या प्रयास, जैसे जीवन – संघर्ष (स्ट्रगल) ।"[9] बृहत हिन्दी कोश में भी 'संघर्ष' शब्द का अर्थ विस्तृत रूप से दिया है- "संघर्ष- पु (सं) दो चीजों का आपस में रगड़ खाना, होड़, स्पर्धा, द्वेष, कामोत्तेजना, धीरे-धीरे लुढ़कना, रेंगना,संसर्प।"[10] वस्तुजगत में हर प्राणी में संघर्ष अनिवार्य होता है। प्रत्येक प्राणी जीवन जीना चाहता है। अत: उसका जीवन तभी साध्य हो सकता है जबकि वह संघर्षरत होता है। 'हिन्दी शब्द सागर' के अनुसार संघर्ष शब्द का अर्थ है- "एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ रगड़ना, संघर्षण, रगड़ आदि। दो विरोधी व्यक्तियों या दलों आदि में स्वार्थ के विरोध के कारण होने वाली प्रतियोगिता या स्पर्धा। वह अहंकार सूचक वाक्य जो अपने प्रतिपक्षी के सामने अपना बड़प्पन जतलाने के लिए कहा जाए। किसी चीज को पीटने या रगड़ने की क्रिया। ईर्ष्या, ड़ाह, कामोददीपन, शत्रुता, बैर-भाव, धीरे-धीरे चलना, टहलना, शर्त लगाना, बाजी लगाना आदि।"[11]

संघर्ष यह अत्यंत व्यापक है। यह प्रकृति के मूल रूप में विद्यमान है। संघर्ष के कारण ही सृष्टि का निर्माण हुआ है। सभी प्रकार के संघर्षो का मूल कारण व्यक्ति-व्यक्ति की आर्थिक विषमता है। मानव संस्कृति के प्रारंभ से ही एक वर्ग साधन संपन्न है तथा दूसरा वर्ग साधन हिन रहा है। मार्क्स के अनुसार आज तक का समाज का इतिहास वर्ग- संघर्ष का इतिहास है। एक वर्ग तो साधनों से पूरी तरह से सम्पन्न है परंतु दूसरा वर्ग अपने अस्तित्व के लिए निरंतर लड़ने वाला है। समाज शुरू से ही दो वर्गों में विभाजित दिखाई देता है। इनमे एक वर्ग शोषित का तथा दूसरा वर्ग शोषक का होता है। परंतु जो शोषक वर्ग है उसके पास तो उत्पादन के साधनों का स्वामित्व होता है और शोषित वर्ग निरंतर मांग कर रहा होता है। शोषित वर्ग तो केवल शारीरिक श्रम ही करता है उसके श्रम का पूरा वेतन तक भी उसको नहीं मिल पाता। इन दोनों वर्गों में निरंतर संघर्ष होता हुआ दिखाई देता है। दोनों वर्ग अपनी जीवन पद्धति, अपना स्वार्थ, अपना सांस्कृतिक आदर्श आदि सभी अलग रखते आये है। उत्पादन प्रक्रिया में व्यक्ति का स्थान यही वर्ग का आधार है।

संघर्ष की परिभाषा

'संघर्ष' को विभिन्न विद्वानों ने निम्नानुसार परिभाषित किया है-

डॉ. मोहनलाल रत्नाकर के अनुसार

"संघर्ष सहयोग की विरोधी प्रक्रिया है। इसमें व्यक्ति या समूह एक-दूसरे के कामों में बाधा डालने का प्रयत्न करते है। कभी-कभी तो वे एक-दूसरे को सर्वथा नष्ट ही करने का निशचय कर लेते हैं और हिंसात्मक उपायों से काम लेते हैं, परंतु यह आवश्यक नहीं कि संघर्ष में हिंसात्मक उपायों से ही काम लिया जाए। कभी-कभी वैधानिक अथवा शांतिपूर्ण उपायों से भी संघर्ष किया जाता है। संघर्ष परस्पर विरोधी लक्ष्यों एवं रीतियो के कारण भी होता है।"[12]

गिलिन और गिलिन के अनुसार :

"संघर्ष वह सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति या समूह अपने विरोधी को हिंसा के भय द्वारा प्रत्यक्ष आहवान देकर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करते हैं।"[13]

डॉ. यश गुलाटी के अनुसार :

संसार में अपने अस्तित्व के लिए मानव हमेशा से ही संघर्ष करता है। "अमानवीय तत्वों और सत्वाओं के आपसी टकराव को संघर्ष कहना जायज मालूम नहीं पड़ता जाहिर है कि मनुष्य का प्रारम्भिक संघर्ष उन चीज़ों और अस्तित्वों से ही हुआ होगा जो उसकी जैविक स्तर कि जरूरतों की उपलब्धि में बाधक थी। अपने जीवन की सुरक्षा और उसके विकास की प्रक्रिया की अवरोधक शक्तियों से निबटने की गर्ज से आवश्यक संघर्ष की जरूरतों की वजह से ही मानवीय सम्बन्धो की शुरुआत हुई।"[14]

डॉ. चन्द्रलाल दुबे के अनुसार :

"अस्तित्व के लिए संघर्ष के अनुसार मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बाधाओं से संघर्ष करता है। यह तो मनुष्य का प्राथमिक संघर्ष है।"[15]

पाश्चात्य दृष्टिकोण :

श्री एच. सी. एमरी ने द्वंद को भी संघर्ष में सम्मिलित करते हुए युद्ध दलों या शक्तियों के परस्पर द्वंद को संघर्ष माना है।[16]

टेंसली के अनुसार :

"इन्होनें संघर्ष को एक ऐसा मानसिक द्वंद्व माना है जो विषम भावों के बीच जन्म लेता है और जिससे प्रेरित होकर मनुष्य विरोधी कार्य करने लगता है।"[17]

ग्रीन के अनुसार :

"संघर्ष दूसरे या दूसरों के संकल्प के विरोध, प्रतिक्रिया या बलपूर्वक रोकने के लिए जानबूझ कर किए गए प्रयत्न को कहते है।"[18]

ए. वी. मैथ्यूज के अनुसार :

"प्रत्येक मानव के मन में अंतत: द्वंद्व चलता रहता है। उदाहरण के लिए यदि हम अपने शत्रु पर घात लगाकर हमला करना चाहते है तो यह प्रतिशोध एवं नैतिक भावों के मध्य संघर्ष को जन्म देता है। इस द्वंद्व में अंतत: एक पक्ष ही विजयी होता है।"[19]

वुडवर्थ के अनुसार :

"अन्तद्वंद्व हो जाने पर मन में उलझन भरी स्थिति पैदा हो जाती है। यह स्थिति विपरीत भावों से युक्त व बड़ी तीव्र होती है।"[20]

मारिस कार्न फोर्थ के अनुसार :

"दो विरोधी तत्व अनिवार्य रूप से परस्पर बंधे रहते है। अत: ऐसी समाज व्यवस्था में वर्ग- संघर्ष भी अनिवार्य रूप से विद्यमान होता है।"[21]

भारतीय दृष्टिकोण :

डॉ. एस. एन. गणशेन के अनुसार :

"मनुष्य का एक आंतरिक लोक भी होता है, जिसमें निरंतर द्वंद्व चलता रहता है, जो कभी व्यक्ति के अपने ही विरोधी भावों के द्वंद्व के रूप में प्रकट होता है।"[22]

श्री जगन्नाथ मिश्र के अनुसार :

"आज का मानव वर्ग-श्रेणियों में विभक्त है। इस श्रेणी विभक्त समाज में मनुष्य-मनुष्य के बीच संघर्ष चल रहे रहे हैं।"[23]

शिवराम आप्टे के अनुसार :

"जहां दो अनुकूल या प्रतिकूल भाव, विचार, वस्तु या परिस्थितियों का सहवास होता है, उसे 'संघर्ष' कहा जा सकता है।"[24]

कुन्दनलाल शर्मा के अनुसार :

"संघर्ष एक कष्टदायक संवेगात्मक दशा है जो परस्पर विरोधी इच्छाओं में उत्पन्न तनावों के कारण उत्पन्न होता है।"[25]

संघर्ष के प्रकार

संघर्ष अनेक स्तरों पर हो सकता है। जीवन के अनेक क्षेत्रों में संघर्ष देखने को मिलता है। मकीवर और पेज ने संघर्ष के दो प्रधान रूपों का जिक्र किया हैं।

1. प्रत्यक्ष संघर्ष

2. अप्रत्यक्ष संघर्ष

प्रत्यक्ष संघर्ष :

जब व्यक्ति या समूह किसी लक्ष्य तक पहुंचने के लिए विरोधी व्यक्ति या समूह के मार्ग में बाधा डालते हैं, एक दूसरे को सीधे चोट पहुंचाते हैं यहां तक कि विनाश करने की चेष्टा करते हैं तो ऐसे संघर्ष को प्रत्यक्ष संघर्ष कहते हैं, पर संघर्ष कभी विरोधी प्रचार तक ही सीमित रह सकता है, कभी हिंसात्मक विरोध तक भी पहुँच सकता है। कभी व्यक्तिगत कारणों से कभी बड़े सामाजिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रत्यक्ष संघर्ष उत्पन्न होते है जैसे दो व्यक्तियों के बीच बदले की भावना से लड़ाई बिल्कुल व्यक्तिगत संघर्ष है। किन्तु वर्ग- संघर्ष, क्रांति और युद्ध बड़े सामाजिक उद्देश्यों पर आधारित सामूहिक संघर्ष हैं।

अप्रत्यक्ष संघर्ष :

संघर्ष का यह रूप आज बहुत ही व्यापक रूप से फैला हुआ है। इसमें संघर्षशील व्यक्ति या समूह प्रत्यक्ष रूप से संघर्ष नहीं करते बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से एक दूसरे के हितों को क्षति पहुंचाना चाहते हैं। मकीवर और पेज ने प्रतियोगिता को अप्रत्यक्ष संघर्ष का एक रूप माना है, लेकिन दूसरे विद्वान इसे स्वीकार नहीं करते आर्थिक या अंतराष्ट्रीय राजनीतिक मंच पर अप्रत्यक्ष संघर्ष अक्सर देखने को मिलता है।

संघर्ष के आयाम

संघर्ष के कई आयाम हो सकते है, जिनके प्रति व्यक्ति अपने मन में जो संघर्ष की भावना है उसको प्रकट करता है। संघर्ष के स्थापित आयाम को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है -

1. सामाजिक संघर्ष

2.आर्थिक संघर्ष

3.धार्मिक संघर्ष

4.राजनैतिक संघर्ष

5.वैयक्तिक संघर्ष

6.प्रजातीय संघर्ष

सामाजिक संघर्ष

सामाजिक संघर्ष दो या अधिक व्यक्तियों में, दो या अधिक समूहों में, दो या अधिक राज्यों में, अथवा दो या अधिक विचारधाराओं में सामाजिक विषयों को लेकर परस्पर विरोध उत्पन्न होने से होता है। डॉ. मोहनलाल रत्नाकर भारतीय समाज में सामाजिक संघर्ष को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं- "सामाजिक दूरी से ऊँची स्थिति वाला वर्ग, नीची स्थिति वाले वर्ग को उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। उसमें कुछ पूर्वाग्रह हो जाता है और वह पूर्वाग्रह संघर्ष को जन्म देता है।"[26] जातिवाद, क्षेत्रवाद तथा भाषावाद ने अनेक बार सामाजिक संघर्षो को वीभत्स रूप दिया है। एक जाति के लोग दूसरी जाति के लोगों पर अत्याचार करते हैं। उच्च वर्ग के लोगों एवं निम्न समझे जाने वाले शूद्रों में यह संघर्ष बहुत ही विक्राल रूप धारण कर लेता है।

राजनीतिक संघर्ष

राजनीतिक संघर्ष का संबंध राज्य से होता है। "राजनीतिक क्षेत्र में स्वार्थ सिद्धि के निमित विभिन्न व्यक्तियों या दलो से जो संघर्ष होता है, उसे राजनीतिक संघर्ष कहते हैं। इसे बढ़ावा देने में जातीय संगठनों, राजनीतिक दलों, सांप्रदायिक तत्वो एवं भाषावाद का विशेष हाथ रहता हैं।"[27] चुनाव के समय राजनीतिक दलों में परस्पर विरोध होने से संघर्ष उत्पन्न हो जाता है और कभी- कभी वे उग्र रूप धारण करके हिंसात्मक राजनीतिक संघर्ष के रूप में परिवर्तित हो जाता है। इसी प्रकार राजनीतिक दल अपने स्वार्थ- सिद्धि हेतु ईर्ष्या, द्वेष, भय आदि का आश्रय लेकर राजनीतिक संघर्ष करते हैं।

"राजनीतिक दृष्टि से संगठित समाज में बसे मानव-समाज का ऐसा संगठित रूप जिसने सार्वजनिक मामलों के प्रबंध और नियंत्रण के लिए संस्थाएं बना ली हों, उस क्षेत्र में सम्पूर्ण वैध शक्ति पर उन्ही संस्थायो का अधिकार और नियंत्रण हों और वे संस्थाएं अपने क्षेत्र में बनाए हुए कानून और आदेशों का पालन करता हो।"[28]

मनोवैज्ञानिक संघर्ष

मनोविज्ञान 'मन' संबंधी विशिष्ट ज्ञान का प्रस्तोता है। यह मनुष्य की मानसिक स्थिति या उसके मन का अध्ययन है। हमारा मन सांसारिक गतिविधियो के विषय में जैसा अनुभव करता है, वैसे ही हम व्यवहार या क्रिया करते हैं। अत: यह मानव या किसी भी जीव के व्यवहार का विज्ञान है। डॉ. रोहतगी के अनुसार- "मनोविज्ञान का कार्य मानसिक क्रियाओ के 'क्यों' और 'कैसे' रूप तथा उनकी उपयोगिता बताना है। "[29]

मनोवैज्ञानिक संघर्ष दो व्यक्तियों, स्थितियों या शक्तियों का न होकर दो मन:स्थितियों एवं आवेगों का होता है। मनोवैज्ञानिक संघर्ष में मानव के आंतरिक अथवा बाहरी दोनों व्यवहार सम्मिलित किए जाते हैं।

धार्मिक संघर्ष

धार्मिक संघर्ष पर विचार करने से पूर्व धर्म के अर्थ को स्पष्ट करना आवश्यक है। धर्म 'धृ' अर्थात 'धारणे' धातु से बना है, जिसे धारण कर सके, वही धर्म है। भारत में धर्म की विस्तृत व्याख्या करते हुए उसे व्यक्तिगत (अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र,सन्यासी) और सार्वजनिक अच्छे गुण दोनों रूपों में अपनाने को कहा गया है। डॉ. रामप्रसाद मिश्र के अनुसार- "धर्म वह तत्व है, जो शाश्वत मानवीय मूल्यों कि प्रतिष्ठा करते हुए समाज को सुव्यवस्थित रखता है। "[30] धार्मिक संघर्ष को स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है कि संसार में सदा ही अच्छाई- बुराई, पाप-पुण्य, सत्य-असत्य, देवी-आसुरी शक्तियों से हमेशा ही परस्पर विरोध या टकराव होता रहता है। इसी धर्म-अधर्म कि लड़ाई को धार्मिक संघर्ष के नाम से अभिहित किया जाता है।

वैयक्तिक संघर्ष

व्यक्तियों के बीच पारस्परिक संघर्ष को वैयक्तिक संघर्ष कहेगें। इसका आधार मनोवैज्ञानिक जैसे- घृणा, द्वेष आदि तथा आर्थिक भी हो सकता है। यह हिंसात्मक तथा अहिंसात्मक दोनों हो सकता है।

प्रजाति संघर्ष

दुनिया में आज भी रंग या नस्ल के आधार पर घोर भेदभाव किया जाता है। कुछ पश्चिमी देशों में गोरे- काले नस्ल का भेद इसका उदाहरण है। दक्षिण अफ्रीका में इसका सबसे अधिक विकृत रूप देखा गया है। वहां के गोरे लोगों ने आर्थिक एवं राजनीतिक शक्ति के बल पर रंग भेद की नीति को कानूनी रूप दे दिया।

संघर्ष की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्रत्येक सिद्धांत का अपना एक इतिहास होता है। जिसके आधार पर हम किसी भी सिद्धांत को अच्छी तरह से परख सकते है। प्रत्येक सिद्धांत किसी न किसी विचारधारा से जुड़ा हुआ होता है। इसी प्रकार वर्ग संघर्ष भी मार्क्सवादी विचारधारा का ही तत्व है। मार्क्स के अनुसार समाज शुरू से ही दो वर्गो में विभाजित रहा है- पूँजीपति वर्ग और मज़दूर वर्ग। इन दोनों वर्गों में आपसी समझौता कभी भी संभव नहीं है, यह दोनों वर्ग शुरू से ही एक दूसरे के प्रति संघर्षरत रहे है। इन दोनों वर्गों में समझौता न होने के कारण ही निरंतर संघर्ष चल रहे है। जब तक यह वर्ग रहेगे तब तक यह असमानता ऐसे ही बनी रहेगी। इतिहास शब्द का प्रयोग अनेक अर्थो में किया जाता है। घटनाओं के घटित होने की प्रक्रिया अथवा क्रम के लिए अधिकाशत: इतिहास शब्द का व्यवहार किया जाता है। आधुनिक समय में किसी भी चीज़ की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए इतिहास के पन्नों की तरफ देखना बहुत ही जरूरी है। जिससे कि हम यह अनुमान लगा सकते है कि उस समय से लेकर आज के समय में उसमे कौन-कौन से बदलाव आए है। जब से सृष्टि का आरंभ हुआ है तब से ही संघर्ष चलते आ रहे है। संघर्ष किसी भी आधार पर हो सकता है चाहे वो धर्म के, जाति के, आधिकारों के लिए ही क्यों न हो। संघर्ष अकेले व्यक्ति का न होकर समूहगत होता है। संघर्ष की पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए हमे इतिहास की और देखना पड़ेगा। समाजशास्त्र में संघर्ष की विचारधारा का उदय अपेक्षतया: देर से हुआ। इसमे राजनीतिक और आर्थिक दोनों प्रकार के संघर्ष सिद्धांतों का समिश्रण देखने को मिलता है। समाजशास्त्रीय साहित्य में संघर्ष की अवधारणा का विकास 1967 के बाद ही हुआ है अत:इसका इतिहास 30-35 वर्षो से अधिक पुराना नहीं है। यद्यपि 'अमेरिकन सोशियोलोजिकल सोसाइटी' ने 1907 से 1930 के अपने सम्मेलनों में संघर्ष विषय को विचार-विमर्श के लिए चुना था। कूले, स्माल, पार्क तथा रास जैसे समाजशास्त्रियों ने अम्रीका में संघर्ष संबंधी विचारधारा के बारे में कुछ साहित्य का सृजन किया। सामाजिक रीति-रिवाजों और मर्यादाओ के झूठे निर्वाह के लिए भीतर से कई-कई परतों में टूटकर बाहर से अपने अपने पाखंड दिखाने के प्रयत्नों में लगा हुआ था। 1960 ई. में कलकता कांग्रेस अधिवेशन में दादा भाई नोरोजी ने कहा था कि - "निर्धन बच्चों के तन काटकर प्रतिवर्ष 30 करोड़ रुपया केवल वेतन तथा पेंशन के नाम पर इंगलेंड भेज दिया जाता है।"[31] प्रथम विश्व युद्ध 1914-1919 ई. काल तथा उसके बाद के चार वर्ष तक कृषि

कि स्थिति बहुत खराब रही, उत्तर भारत में अकाल पड़े। प्रथम महायुद्ध के बाद संघर्ष का समाजशास्त्रीय अध्ययन करने वालो में राबर्ट पार्क का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होने संघर्ष को मानवीय अंत: क्रिया का महत्वपूर्ण स्वरूप बताया। 1923 तक स्थिति कुछ संभली तो 1929 में अंतर्राष्ट्रीय मंदी संकट उपस्थित हो गया। आर्थिक दुर्दशा और युद्ध व्यय के बोझ का अनुभव गांधी जी द्वारा 2 मार्च 1930 को लॉर्ड ईविर्न को लिखे गए पत्र से भी होता है। गांधी जी ने लिखा है- "इस शासन में करोड़ो भूखे मनुष्यो का दिन-दिन अधिकाधिक रक्त शोषण करके उन्हे कंगाल बना दिया गया है। उस पर सैनिक व्यय का असहयनीय भार लादकर उन्हे बर्बाद कर दिया गया है।"[32] सरकार भी किसान की कोई सहायता नहीं करती थी।

मनुष्य समाज के धीरे- धीरे विकास को लेकर सामाजिक सिद्धांत निश्चित होते है। मनुष्य समाज जीवन को संघर्ष के क्षेत्र में देखने लगता है। इन सब संघर्षो में से वर्ग- संघर्ष अपनी निरंतर सीमा पकड़ता जा रहा है। यदि हम वर्ग- संघर्ष के इतिहास को जानना चाहते है तो वर्ग संघर्ष का ऐतिहासिक आधार इस प्रकार है- "मनुष्य समाज ने धन धान्य और सम्पत्ति इकट्ठा करके अपनी सभ्यता की उन्नति आरम्भ की थी। समाज की सम्पन्न श्रेणी ने अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए दूसरी श्रेणी के लोगों को अपना गुलाम बनाकर पैदावर के हथियारों के तौर पर व्यवहार करना शुरू किया था। उससे ही मनुष्य समाज में पैदावर की गति में बढ़ती हुई सभ्यता का विकास हुआ। गुलामों द्वारा पैदा की गयी सम्पत्ति से मनुष्य समाज ने वे पदार्थ तैयार किये, जिन्हें एक मनुष्य की निजी शक्ति निजी उपयोग के लिए तैयार न कर सकती थी। जैसे सैकड़ों मील लंबी सड़के, नहरें, यूनान के मंदिर, मिस्र के पिरमिड और विशाल इमारतें आदि।"[33] परिश्रम के आधार पर ही समाज में धन और ज्ञान का विकास होने लग पड़ा। जैसे-जैसे धन और ज्ञान की बढ़ोतरी हुई तो अधिक कारखाने खुल गये। आधुनिकता के कारण लोगों की जगह अब मशीनों ने ले ली। एक ही मनुष्य मशीन की सहायता से बीस लोगों का काम करने लग पड़ा। इस प्रकार जो मजदूर वर्ग है वह अपने मालिकों के लिए बोझ बनकर रह गये हैं। इसी दौरान गुलामी प्रथा के विरुद्ध आंदोलन भी चला। गुलामी को मनुष्य समाज का कलंक बताया गया। इस के दौरान सभी गुलाम लोगों को मनुष्य की तरह स्थान प्रदान किया गया। मुख्य उद्देश्य यह ही था कि पूंजीपति व्यक्ति स्वतन्त्रता पूर्वक व्यवसाय चला सके। जो निर्धन है वे अपनी श्रम शक्ति स्वतन्त्रता पूर्वक बेचकर मजदूरी या वेतन पा सके। मजदूर वर्ग अब पूरी तरह से आजाद हो गया। लोगों का काम अब मशीनों ने ले लिया। जिससे कि बेरोज़गारी बढ़ गयी। पूंजीपति वर्ग थोड़े वेतन में मजदूर वर्ग से ज्यादा काम लेता था परंतु धीरे-धीरे पूंजीपति के शोषण तंत्र को समाज का हरेक मजदूर समझने लगा था। वह पैदावारी की तुलना में मजदूरी की मांग करने लगा।

जिससे श्रमिक और पूंजीपति वर्ग दोनों में संघर्ष शुरू हो गया। इस तरह वर्ग- संघर्ष का ऐतिहासिक स्वरूप बताया जाता है।

रचनाकार का जीवन परिचय

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

कथाकार मिथिलेश्वर हिन्दी कथा साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी मिथिलेश्वर ने कहानी, उपन्यास, निबंध, संस्मरण, व्यंग्य के साथ- साथ दर्जनों समीक्षात्मक आलेख भी लिखे हैं। इनकी कहानियां प्राय: स्तरी एवं प्रसिद्ध साहित्यक पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुई है। 1973 की 'सारिका' के नवलेखन विशेषांक में प्रकाशित 'अनुभवहीन' उनकी प्रथम कहानी है।

जन्म :

मिथिलेश्वर जी का जन्म 31 दिसंबर 1950 बिहार के भोजपुर जिले के बैसाडीह नामक एक गांव में हुआ। अपने जन्म स्थान की विशेषता का जिक्र मिथिलेश्वर ने स्वंय एक स्थान पर दिया है -"मैं आपको बता दूं,मेरा जन्म भोजपुर जिले के एक ऐसे इलाके में हुआ है जो चौरी,डकैती,लूटपाट,मनमानी और ज्यादती को लेकर पूरे जिले में मशहूर है। उस इलाके में कोई भी बात जो पहले लाठी के सहारे तय की जाती थी, अब बंदूक की नोंक पर तय की जाती है।" पता नहीं क्यों, बचपन से ही अपने इलाके के अत्याचार- अनाचार, जुल्म, सितम,अन्याय को मैं सह नहीं पता था। "लेकिन शरीर से मैं उतना तगड़ा भी नहीं था कि इसका विरोध कर सकू। " इन्ही बैचेनियों के बीच एक दिन मैंने लिखना शुरू किया था। "

शिक्षा :

मिथिलेश्वर जी की प्रारंभिक शिक्षा गांव में हुई। 'के.के. विद्यालय' जमोढ़ी और उच्च विद्यालय कातर (भोजपुर) में माध्यमिक शिक्षा पूर्ण हुई। ए. एस. कॉलेज विक्रमगँज (रोहतास) से बी. ए. हिन्दी ऑनर्स तथा मगध विश्वविद्यालय (बोधगया) से हिन्दी में एम.ए. और पीएच.डी. की उपाधियां प्राप्त की। अपने आजीविका के लिए स्वतंत्र लेखन व एच.डी. जैन कॉलेज (आरा) के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक रहे।

लेखन :

1965 के विद्यार्थी जीवन से ही प्रारम्भ। अब तक दो दर्जन पुस्तकें प्रकाशित।

कहानी-संग्रह :

बाबूजी (1976), बंद रास्तों के बीच (1978), दूसरा महाभारत (1979), निर्णय (1980), तिरिया जन्म(1982), हरिहर काका(1983), एक में अनेक(1987), एक थे प्रो. बी. लाल(1993), भोर होने से पहले(1994), चल खुसरों घर आपने(2000), जमुनी(2001)।

उपन्यास :

झुनिया(1980), युद्धस्थल(1981), प्रेम न बाड़ी ऊपजे(1995), यह अंत नहीं (2000), सुरंग में सुबह।

निबंध- संग्रह :

'संभावना अब भी है'।

संपादन :

'मित्र' नामक एक साहित्यक पत्रिका का संपादन।

पुरस्कार :

सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार को मिलाकर मिथिलेश्वर जी को अब तक पाँच पुरस्कार मिल चुके हैं। सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार राशि के अलावा सोवियत संघ की यात्रा भी शामिल रहती है, किन्तु अपनी अस्वस्थता के कारण मिथिलेश्वर जी इस अवसर से लाभान्वित न हो सके। साहित्यिक सम्मान और पुरस्कारों का विवरण निम्नलिखित है-

1. मुक्तिबोध पुरस्कार म. प्र. शासन साहित्य परिषद द्वारा "बाबूजी" कहानी संग्रह के लिए (1976)

2. सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार (1979) में "बंद रास्तों के बीच" कहानी संग्रह के लिए।

3. यशपाल पुरस्कार - "मेघना का निर्णय" कहानी संग्रह के लिए उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा (1981-82) के लिए।

4. अमृत पुरस्कार – निखिल भारत बंग साहित्य सम्मेलन द्वारा (1983) में सर्वोत्कृष्ट हिन्दी लेख के लिए।

5. साहित्य मार्तण्ड (1994) में नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा "साहित्य मार्तण्ड" उपाधि से विभूषित।

संदर्भ सूची

1. कालिका प्रसाद राजवल्लभ सहाय, बृहत हिन्दी कोश, पृष्ठ- 1299

2. सं रामचंद्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश-पांचवा खंड, पृष्ठ- 15

3. शिवप्रसाद शास्त्री, अशोक मानक विशाल हिन्दी कोश, पृष्ठ- 610

4. प्रा. शरद पाटील मार्क्सवाद व फूले-आंबेडकरवाद, पृष्ठ- 45

5. भास्कर लक्ष्मण भौण्ठे, भारतीय आणि पाशिचमात्य राजकीय विचार, पृष्ठ- 22

6. प्रा. शरद पाटील मार्क्सवाद व फूले-आंबेडकरवाद, पृष्ठ- 45

7. बाबूराम पाण्डेय, राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अंतराष्ट्रीय संबंध, पृष्ठ-04

8. लल्लनजी सिंह, राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा, पृष्ठ-01

9. शिवप्रसाद, भारद्वाज शास्त्री अशोक मानक हिन्दी शब्दकोश, पृष्ठ- 662

10. कालिका प्रसाद राजवल्लभ सहाय, बृहत हिन्दी कोश,पृष्ठ- 1393

11. सं शामसुंदर दास, हिन्दी शब्द सागर (दसवां भाग), पृष्ठ-4851

12. मोहनलाल रत्नाकर, हिन्दी उपन्यास: द्वंद्व और संघर्ष,पृ-3

13. मोहनलाल रत्नाकर, हिन्दी उपन्यास: द्वंद्व और संघर्ष,पृ-3

14.यश गुलाटी, कविता और संघर्ष चेतना, पृ॰-11

15. चंदूलाल दूबे, नाटक और रंगमंच,पृ॰- 25

16. एच. सी. एमरी एण्ड के. सी. ब्रोअस्तर, द न्यू सेंचुरी डिक्शनरी, पृ. 298

17. ए. सी. टेंसली, द न्यू साइकलौजी एण्ड इट्स रिलेशनस आफ लाइफ, पृ॰-15

18. फ्रायड, दी इंटरप्रीटेशन ऑफ ड्रामा, पृ॰-661

19. ए. वी. मैथ्यूज,साइकोलौजी एण्ड प्रिंसिपल्स ऑफ एजुकेशन, पृ॰-90

20. वुडवर्थ, साइकोलौजी, पृ॰-268

21. मारिस कार्न फोर्थ, डायलिकटिकल मालीरिआलिज़्म, पृ॰-105

22. एस. एन. गणेशन, हिन्दी उपन्यास का अध्यन्न, पृ॰-389

23. प्राध्यापक जगन्नाथ मिश्र, साहित्य की धारा, पृ॰-150

24. वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश, पृ॰-482

25. कुंदनलाल शर्मा, शिक्षा मनोविज्ञान, पृ॰-513

26. मोहनलाल रत्नाकर, हिन्दी उपन्यास: द्वंद्व और संघर्ष, पृ॰- 22

27. मोहनलाल रत्नाकर, यथोपरि, पृ॰-23

28. ओमप्रकाश गाबा, राजनीति विज्ञान कोश; पृ॰- 294

29. मिथलेश रोहतगी, हिंदी की नई कहानी का मनोवेज्ञानिक अध्ययन,पृ॰-३०

30. रामप्रकाश मिश्र, हिन्दू धर्म ; पृ॰- 4

31. काँग्रेस का इतिहास, पटट्िभसिता रमेया, पृ॰-79

32. वही पृ॰ – 247

33. मार्क्सवाद, यशपाल, पृ॰-37

अध्याय दो

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित सामाजिक संघर्ष

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। समाज में रहते हुए उसे बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। समाज में रहते हुए जब उसे किसी चीज़ की प्राप्ति नहीं हो पाती तो वह उसे प्राप्त करने के लिए निरंतर संघर्ष करता है। "व्यक्ति विशेष अपने में एक समाज लेकर चलता है। उसका यह आभ्यांतर समाज ही बाहरी समाज से टक्कर लेता है।"[1] जातिवाद, क्षेत्रवाद तथा भाषावाद ने अनेक बार सामाजिक संघर्षो को वीभत्स रूप दिया है। एक जाति के लोग दूसरी जाति के लोगों पर अत्याचार करते है। उच्च वर्ग के लोगों एवं निम्न समझे जाने वाले शूद्रों में यह संघर्ष बहुत ही विकराल रूप धारण कर लेता है। डॉ. मोहनलाल रत्नाकर भारतीय समाज में सामाजिक संघर्ष को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं- "सामाजिक दूरी से ऊँची स्थिति वाला वर्ग, नीची स्थिति वाले वर्ग को उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। उसमें कुछ पूर्वाग्रह हो जाता है और वह पूर्वाग्रह संघर्ष को जन्म देता है।"[2]

सामाजिक संघर्ष दो या अधिक व्यक्तियों में, दो या अधिक समूहों में, दो या अधिक राज्यों में, अथवा दो या अधिक विचारधाराओं में सामाजिक विषयों को लेकर परस्पर विरोध उत्पन्न होने से होता है। मनुष्य के जीवन में संघर्ष चलता ही रहता है बिना संघर्ष किए मनुष्य अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच पाता तथा जीवन मृत्यु के समान निष्क्रिय हो जाता है। प्राणी के जीवन का प्रारम्भ अनुभूति के द्वंद्व से होता है। जिस प्रकार कलाकार की कला का आधार उसके मन का द्वंद होता है , जैसे विश्व के श्रेष्ठ कलाकार ईश्वर की यह सृष्टि रचना उसके मन के संघर्ष की अभिव्यक्ति है। सारा ब्रह्मांड और उसकी प्रकृति समाज और संस्कृति, व्यक्ति और उसका जीवन संघर्ष के कूलों से टकराता हुआ अग्रसारित होता चलता है। संघर्ष के कारण ही जीवन और जगत की उन्नति, गति और प्रगति होती है। सामाजिक संघर्ष को बहुत से विद्वानों ने अपने- अपने ढंग से परिभाषित किया है। जो कि निम्नलिखित अनुसार है।

सामाजिक संघर्ष की परिभाषा

विभिन्न विद्वानों के अनुसार इसकी परिभाषा इस प्रकार है –

आलसन के अनुसार :

आलसन के शब्दो में इसकी परिभाषा इस प्रकार है , " सामाजिक संघर्ष या सामूहिक संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब दो या दो से अधिक व्यक्ति सामाजिक अत: क्रिया में एक दूसरे का विरोध करते है, एक दुर्लभ या असंगत लक्ष्यों की प्राप्ति करने के लिए एक दूसरे पर सामाजिक सत्ता का उपयोग करते है और अपने विरोध से उन लक्ष्यों को प्राप्त करने में बाधा डालते है। " [3]

बेबर के अनुसार :

बेबर ने भी सामाजिक संघर्ष को कुछ इसी तरह परिभाषित करते हुए कहा है, "सामूहिक संघर्ष एक सामाजिक संबंध होता है जहां व्यक्ति अपनी इच्छानुसार जान– बूझकर अन्य पार्टी या पार्टियों के प्रतिरोध के प्रतिकूल अनुक्रिया करता है। " [4]

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर समझा जा सकता है कि जो संघर्ष समाज सापेक्ष है, वह जनसंघर्ष है। इसके तहत संघर्ष के जरिये समाज में बदलाव या परिवर्तन का मकसद कार्यरत है। समाज एक नियत व्यवस्था का नाम है मौजूदा पूंजीवादी व्यवस्था की कई विडंबनाए है। समाज वर्ग, जाति, धर्म, विचारधारा, संस्कृति, भाषा आदि कई विभाजनों की अलग- अलग दायरों में फंसा हुआ है। भारत की विशाल राजनीतिक तथा सामाजिक एकता के धागे में पिरोकर भी इन विभाजनों की अपनी एहमियत है, क्योंकि ये सारे विभिन्न सांस्कृतिक एवं वैचारिक विरासत के नागरिकों के अलग- अलग पुंज हैं, जो एक ही मुल्क के समान अधिकारी हैं। इस लिए इनके बीच आपसी संघर्ष सहज है जो जनसंघर्ष है। इसके कई आयाम है, जैसे- वर्ग संघर्ष, जाति संघर्ष, लिंग संघर्ष, धर्म संघर्ष आदि।

जन संघर्ष एक ऐसा हथियार है जो समाज को जितना आगे ले जा सकता है उतना पीछे भी। मनुष्य में सहज ही एक पशुतावृति मौजूद है,

मानवीयता उसे कमजोर कर देती है। हालांकि अनुकूल वातावरण में वह बाहर निकलती है जिससे खून- खराबा सम्भव है। हिंदू- मुस्लिम दंगों में इसका बुरा असर दिखाई पड़ता है। इसीलिए जन संघर्ष गम्भीर मसला है। श्री रामशरण जोशी जी की राय में " आतंकवाद में भी जनसंघर्ष की भावनाएं व कोशिशें प्रतिबिम्बित होती हैं। बगैर जन समर्थन व हिस्सेदारी के आतंकवादी अभियानों का लंबे समय तक चलाये रखना लगभग असम्भव हैं। " [5]

हिन्दी साहित्य में बहुत से ऐसे साहित्यकार हुए हैं जिन्होने सामाजिक संघर्ष को अपने काव्य के माध्यम से उसको लिखित रूप देकर जनता के समक्ष प्रस्तुत किया है। प्रमुख साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों, जयशंकर प्रसाद जी ने अपने नाटकों, आदि में सामाजिक संघर्ष को प्रस्तुत किया है। प्रत्येक कवि या साहित्यकार समाज की समस्याओं से भलि-भांति परिचित होते हैं, इन कवियों या साहित्यकारों ने वही बयान किया है जो उन्होंने वास्तविक जीवन में भोगा है। इनका मंतव्य समाज की विसंगतियों को जन-साधारण के समक्ष लाना रहा है। आधुनिक साहित्यकार मिथिलेश्वर जी ने भी सामाजिक संघर्ष को बहुत ही सशक्त ढंग से अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इन्होने सामाजिक संघर्ष के अंतर्गत पारिवारिक स्थिति, ग्रामीण जीवन, मज़दूरों का शोषण, दलितों पर होने वाले अत्याचार, स्त्रियों की दयनीय दशा को अपने उपन्यास में प्रस्तुत किया हैं। जिनका वर्णन इस प्रकार है-

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में पारिवारिक स्थिति :

परिवार समाज की मूल इकाई हैं। परिवार के आभाव में समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। परिवार ही समाज की प्रथम इकाई है। सबसे पहले एक व्यक्ति आता है। व्यक्ति से ही परिवार बनता है। परिवार के अंतर्गत पति, पत्नी और उनके बच्चों का समूह माना जाता है, परंतु विश्व के अधिकांश भागों में परिवार का अर्थ एक सम्मिलित रूप से निवास करने वाले रक्त संबंधियों का वह समूह है जिसमे विवाह और दन्तक प्रथा (गोद लेने) द्वारा परिवार की स्वीकृति प्राप्त व्यक्ति भी सम्मिलित होते हैं। जैसा हमारे परिवार का वातावरण होगा वैसा ही बच्चे पर उसका असर दिखाई देगा। आज के इस परिवर्तित युग का प्रभाव हमारे परिवारों पर स्पष्ट दिखाई देता है। आज लघु परिवारों ने संयुक्त परिवारों का स्थान ले लिया है। आज के समय में लोगों के मनों से मानवीय भावनाएं समाप्त होती जा रही है। पारिवारिक सम्बन्धो में दिखावा तथा खोखलापन आ रहा है। व्यक्ति अकेला-अकेला रहना पसंद करता है। पति-पत्नी,

माँ-बाप, भाई-बहन आदि रिश्तों के परंपरागत आदर्श न होकर ऊपरी दिखावा मात्र हैं। पारिवारिक सदस्य अपने ही परिवार में अपने आप को असुरक्षित महसूस करते है तथा एक दूसरे के साथ न रहकर अलग रहना चाहते हैं। आज के परिवारों में अपनत्व तथा प्यार का आभाव है। इसके परिणामस्वरूप परिवार के सदस्य मानसिक संघर्ष से गुजरते हैं जिससे व्यक्ति का जीवन कलहपूर्ण, निराशायुक्त तथा अशांतिपूर्ण बन जाता है। उपन्यासकर मिथिलेश्वर जी ने भी अपने उपन्यास 'यह अंत नहीं' में परिवार की जो समस्याएं है उनको लेखनी का रूप देकर प्रस्तुत किया है। मिथिलेश्वर जी ने परिवार में माता- पिता, पिता-पुत्र, पुत्र-माता के आपसी प्रेम तथा द्वेष को अभिव्यक्त किया है। जिसका उल्लेख इस प्रकार से है-

परिवार में माता-पिता दोनों ही अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। माता-पिता के बिना संसार में बच्चे का कोई अस्तित्व नहीं रह जाता। बच्चे की की हरेक परेशानी का जिम्मा माँ अपने सिर पर उठाती है वह इस बात से पूरी तरह परिचित होती है कि उसके बच्चे के लिए कौन सा फैसला ठीक है और कौन सा गलत है इसी प्रकार जब चुनिया के माई - बाबू उसके लिए योग्य वर की खोज करते हैं, तो अचानक माई- बाबू फिर उसकी शादी की चर्चा छेड़ लेते हैं। जिस से चुनिया की शादी की बातचीत चल रही थी। परंतु बताने वाले ने बता दिया कि लड़का शराब पीता है, तो इस पर चुनिया की माई कहती है कि "जमाना बहुत खराब चल रहा है बुंतु के बाबू.. ! लोगों को पहचानना मुश्किल है। जाने-सुने परिवार को छोड़कर अब अनजान घरों में मत जाया करो….. " [6]

माँ का रिश्ता दुनिया के सब रिश्तों में से पवित्र रिश्ता है। एक माँ ही अपने बच्चे की जिन्दगी का सही अनुमान लगा सकती है। माँ अपने बच्चों से किसी प्रकार का लालच नहीं रखती। इसी प्रकार पात्र जोखन की पहली माँ की मृत्यु हो जाने के बाद जोखन के पिता जब दूसरी शादी करवा लेते हैं तो जोखन के साथ जब वो दुर्व्यवहार करती है तो जोखन को अपनी पहली माँ की बहुत ही याद आती है। नई माँ द्वारा जोखन पर बहुत से प्रहार किए जाते थे। बचपन की अपनी पराश्रित अवस्था तक नई माँ की ज्यादतियों और जुल्मों को अपने भाग्य की विडंबना मान जोखन सहता रहा। लेकिन जैसे ही उसे लगा कि उसके पांव के नीचे भी जमीन है, उसने नई माँ को पटकनियाँ देना प्रारम्भ कर दिया - "नौकर नहीं कि तेरे पांव चांपू और तेरी देह रोंदू तू तो बसाती है जितना करा लिया करा लिया अब तेरे पंजरा मैं ठेकने वाला नहीं ….. । " [7]

इसी प्रकार जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'स्कन्दगुप्त' में पारिवारिक संघर्ष का उत्कृष्ट चित्रण सामने आता है। अनन्तदेवी, स्कन्दगुप्त की सौतेली माँ है। जिस माँ ने अपने पेट से जन्म दिया है उस माँ तथा सौतेली माँ में जमीन- आसमान का अंतर दिखाई देता है।सौतेली माँ कभी भी बच्चे के साथ वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा खुद की माँ अपने बच्चे से करती है। जयशंकर प्रसाद जी ने इसके माध्यम से सौतेली माता और पुत्र के बीच जो आपसी झगड़ा चल रहा है उसका वर्णन किया है, यथा-

"स्कंदगुप्त : मेरी सौतेली माँ, तुम ?

अनन्तदेवी : स्कन्द ! फिर भी मैं तुम्हारे पिता की पत्नी हूं। घुटनों के बल बैठ कर हाथ जोड़ती हुई।

स्कंदगुप्त : अनन्तदेवी ! कुसुमपुर में पुरगुप्त को लेकर चुपचाप बैठी रहो। जाओ- मैं स्त्री पर हाथ नहीं उठाता, परंतु सावधान ! विद्रोह की इच्छा न करना, नहीं तो क्षमा असम्भ्म्व है ! आह ! मेरी माँ। " [8]

इस उदाहरण में पुत्र एवं विमाता के बीच पारिवारिक संघर्ष के स्वरूप को दर्शाया गया है। इसी प्रकार जब जोखन के पिता नयी माँ ले आते है तो वह जोखन के साथ माँ जैसा व्यवहार नहीं करती जिस कारण जोखन अपनी नयी माँ को बुलाना तक भी पसंद नहीं करता। परंतु जोखन की पत्नी अपनी सास को पूरा आदर सम्मान देती थी। परंतु जोखन इस बात से बहुत ही दुखी था की उसकी माँ के किसी और मर्द के साथ नाजायज संबंध थे। वह इस बात को कभी भी सहन नहीं कर सकता था। जब जोखन की पत्नी अपनी सास को खाना खाने के लिए बोलती है तो वह कहती है-

उसी दिन, दिन के खाने के वक्त चुनिया सास के पास पहुँची थी-"चलो खा लो अम्मा ! खाने का समय हो गया है । आप खा लोगी तो मैं भी खा लूंगी।"

जबाब में उत्तर दिया सास ने -"तू हमारे चक्कर में न रह। तेरा मर्द हमें देखना नहीं चाहता है और तू खिलाने आई है। हमारे पास तुझे देख लेगा तो तेरी एक करम बाकी नहीं छोड़ेगा जा अपनी कोठरी में और चुपचाप खा लें। फिर आईदे से मेरे पीछे मत पड़ना ! "[9] इसी प्रकार मिथिलेश्वर जी ने अपने उपन्यास के माध्यम से पुत्र और माता के बीच आपसी टकराव को प्रस्तुत किया है।

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं'में मज़दूरों के शोषण का वर्णन:

प्राचीन समय से ही उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग का शोषण करते आ रहे हैं। पूंजीपति वर्ग मजदूर वर्ग से अधिक काम करवाता है तथा उनके किये गये काम का पूरा वेतन भी उनको नहीं दे पाते तथा उनको शारीरिक तथा मानसिक रूप पर उनको प्रताड़ित करते हैं तथा उनका शोषण करते हैं। मज़दूर वर्ग के लोगों को समाज की उन सभी सुख- सुविधाओं से वंचित किया गया जिन्हें उच्च वर्ग के लोग अपने दैनिक जीवन में प्रयोग में लाते थे। मज़दूर वर्ग की स्थिति इतनी दयनीय हो गयी है कि उनको अपना जीवन तक जीने का पूरा अधिकार नहीं है। आधुनिक युग में पैसे का बोलबाला ज्यादा बढ़ गया है,पैसे के आधार पर ही या उसके दर्जे के आधार पर ही लोग आपसी रिश्ते कायम करने लगे है। अर्थ की कमी के कारण ही आज मज़दूर वर्ग उच्च वर्ग के लोगों की चक्की में बुरी तरह से पिसता जा रहा है। हिन्दी साहित्य में भी बहुत से ऐसे साहित्यकार हुए हैं जिन्होने उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग पर होने वाले शोषण का वर्णन अपनी रचनाओं में किया हैं। मुंशी प्रेमचंद, रेणु, शुभदर्शन, यशपाल, महाश्वेता देवी, आदि साहित्यकार प्रमुख हैं। मुंशी प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यास 'गोदान'में होरी के माध्यम से निम्न वर्ग के शोषित जीवन का वर्णन किया है। इसी प्रकार आधुनिक साहित्यकार मिथिलेश्वर जी ने भी अपनी रचनाओं में भी समाज में चल रही इन सभी बुराइयों को अंकित किया है। मिथिलेश्वर जी ने अपने उपन्यास 'यह अंत नहीं' में जमींदारों द्वारा मज़दूरों पर किये जाने वाले शोषण का वर्णन इस प्रकार किया हैं-

श्रवण सिंह के घर व्यक्तिगत रूप से नरोतम को कोई दिक्कत नहीं थी। जो तय था, उसके लेन- देन में भी कोई कमी नहीं थी। उसने यही सोचा था कि साल पर मालिक बदलने की जगह श्रवण सिंह के यहां काम करना ही अच्छा रहेगा परंतु श्रवण सिंह की बेटे अगम द्वारा नरोतम की बेटी चुनिया के साथ जो बदसलूकी की है उससे इस घर के प्रति उसके मन में दरार पैदा हो गई थी। इस बजह के कारण ही चुनिया ने मालिक के यहां काम छोड़ दिया तथा अफवाह चाहे झूठी हो या सच्ची, शादी- ब्याह में बहुत रुकावट बनती है। चुनिया की शादी अभी करनी थी। इसीलिए नरोतम ने समय आने पर ही अपनी मंशा व्यक्त की। तथा इस समय की प्रतीक्षा कर रहा था। नरोतम द्वारा काम न करने पर श्रवण सिंह उसे बहुत प्यार से समझाने- मनाने पर भी जब वह तैयार नहीं हुआ तो अपना जमींदारी रोब इस प्रकार जताया - " तो अइसे ही बिना किसी कारण के काम छोड़ देगें..? हमारे घर को भैया जी का दालान समझा है कि जब इच्छा हुई रहा, जब इच्छा हुई चल

दिया। हम इस तरह तुझे छोड़ने वाले नहीं। जैसे पहले करते थे वैसे चुपचाप करते जाओ..।"[10] इससे यह स्पष्ट होता है कि उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग का शोषण सदियों से ही होता आ रहा है मज़दूर वर्ग कि स्थिति इतनी दयनीय हो गयी है कि पूंजीपति वर्ग उसको अपने जूते के समान दर्जा देने लगा है। न चाहते हुए भी निम्न वर्ग की स्थिति ऐसी हो गयी है कि उनको मजबूरी की हालत में उच्च वर्ग की नौकरी करनी ही पड़ती है।

चौथी मंजिल पर बैठा जोखन आज यह मन बनाकर आया था कि काम से जल्दी फारिग हो उसे घर जाना है। उसने चुनिया से कहा भी था कि दांव लग गया तो आज पहले भी आ जांऊगा। उसने काम पर पहुँचते ही हैड मिस्त्री से कह दिया था - "आज कुछ पहले ही चला जांऊगा उस्ताद, फिर कल से जब तक चाहोगे भिड़ा रहूंगा ... ! " पर जबाब में हैड मिस्त्री ने उड़ान भरने वाले पक्षी के डैने कुतर डाले थे "आज तो ढलाई है जोखन आज तुम नहीं छूट सकते ढलाई न होती तो तुझे छोड़ देता ... ।"[11]

मज़दूर वर्ग की दशा बहुत ही शोचनीय हो चुकी है। मालिक दिन भर दिन मज़दूर वर्ग को अपनी हवस का शिकार बनाता जा रहा है। मज़दूर वर्ग द्वारा सारा दिन काम करते रहने पर भी उनको पूरा वेतन तक नहीं मिल पाता। मजदूर वर्ग सारा दिन खून पसीना एक करके काम करता रहता है और मालिक लोग सारा दिन आराम से बैठे दिन भर दिन मोटे होते चले जा रहे है । इसी प्रकार की एक उदाहरण निराला जी की 'भेद कुल खुल जाय वह' कविता में मिलती है। यह कविता मिल मालिक मज़दूरों के शोषण से दिन पर दिन मोटे होते चले जा रहे हैं। लेकिन इस भेद को मजदूर वर्ग महसूस करने लगा है। इसलिए वह कहता है –

भेद कुल खुल जाय वह

सूरत हमारे दिल में है।

देश को मिल जाय जो

पूंजी तुम्हारे मिल में है।[12]

इसी प्रकार मिथिलेश्वर जी ने अपने उपन्यास 'यह अंत नहीं' में खेत के मालिक द्वारा निम्न मजदूर को बिना उसकी किसी गलती के कारण उल्टा सीधा बोलने का वर्णन किया है। परंतु मजदूर वर्ग की दशा इतनी हीन हो गयी है कि उसको अपने पालन-पोषण के लिए वो भी स्वीकार करनी पड़ती है जो कि इस प्रकार है- जब कटनी के दिनों में नरोतम बोझा ढोता तो

उसकी बेटी चुनिया धान कि बालियों को चुनती। पिता के बार-बार कहने पर भी चुनिया नहीं हटती थी। चुनिया बाल बीनकर वह कभी चार सेर तो कभी पाँच सेर धान जुटा लेती थी। यह जो बाल बीना धान होता था वह उसका अपना होता था। माई तो धान देख निहाल हो जाती थी-" नन्हकी के बाबू, अब अपनी नन्हकी भी कमासुत हो गई ! " लेकिन जब वह बाल बीन रही थी तो श्रवण सिंह के वहां के लोगों कि आंखों में उसका बाल बीनना गड़ जाता। श्रवण सिंह का मुंहफट चाचा नकटू अपनी आदत से बाज नहीं आता- "बोझा बाँधते हुए खेतों में जान बूझकर बाल (अनाज की बलियां) मत गिराओ नरोतम। हम देख रहे है कि जिस खेत में बोझा बांध रहे हो उसमे ज्यादा बाल गिरा देते हो ! "[13]

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में नारी की स्थिति :

हमारे समाज में शुरू से ही नारी की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। नारी को पुरुष के समान अधिकार प्राप्त नहीं थे। उसको पुरुष के जूते के समान समझा जाता था। परंतु आधुनिकीकरण के कारण नारी ने अपने अधिकारों की मांग करनी शुरू कर दी जिससे कुछ हद तक उनकी दशा में सुधार आया। फिर भी आज के समय में नारी ने शिक्षा प्राप्त कर आर्थिक रूप से पूरी तरह से स्वतंत्र तो है लेकिन वहीं दूसरी ओर वह अनेक कुंठाओ और अपराधों से भी घिरी हुई है। समाज पुरुष प्रधान है। पुरुष प्रधान समाज में नारी आर्थिक व सामाजिक स्तर पर पूर्णतया पुरुष पर निर्भर है। आज भी उसको पुरुष के समान नहीं समझा जाता। उसको किसी न किसी कारण से प्रताड़ित किया जाता है। पुरुष समाज उससे पोषण पाकर भी उसका शोषण करता है क्योकि वो आर्थिक आधार पर उस पर आश्रित है। स्त्री की समाज में स्थिति और उसकी आर्थिक पराधीनता पर मशहूर समाजवादी चिंतक राधामोहन गोकुल जी व्यग्य करते हुए कहते है- "स्त्री का सर्वस्व पति है। परंतु पति की संपति में स्त्री का हक एक पाई भी नहीं। क्यों? इसलिए कि नारी उसका आधा अंग है? बेचारी स्त्री न तो पिता की संपति में हिस्सा पा सकती है न पति या पुत्र की संपति में। आजन्म केवल गुलामी करते रहना ही उसका धर्म है। वाह! अर्धांगिनी का क्या सुंदर सम्मान है?"[14] समाज की बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार ही प्रेमचंद के विचार नारी की स्थिति, सम्मान, अधिकार हेतु परिवर्तित होते रहे हैं फिर भी प्रेमचंद ने अपने सुप्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' में कहलवाया है कि 'नारी पुरुष से उतनी ही श्रेष्ठ है जितना प्रकाश अंधकार से श्रेष्ठ है।' हिन्दी साहित्य में बहुत से ऐसे साहित्यकार हुए हैं, जिन्होने नारी की दयनीय दशा का वर्णन अपनी रचनाओं के माध्यम से उसको लेखनी का रूप देकर जनता के समक्ष प्रस्तुत किया है। साहित्यकारों ने अपने

उपन्यासों में समाज में व्याप्त विसंगतियों के कारण दलित व शोषित स्त्रियों की दयनीय दशा को अत्यन्त मार्मिक ढंग से रेखांकित किया है इसी प्रकार लेखिका शरद सिंह ने अपने उपन्यासों में नारी को श्रेष्ठ बताया है और साथ ही यह भी स्वीकारा है कि- "नारी का प्रथम तथा पुरुष का गौण स्थान है।" उनकी मान्यता है कि नारी के बिना समाज और पुरुष दोनों ही अधूरे हैं। इसी प्रकार आधुनिक साहित्यकार मिथिलेश्वर जी ने भी अपने उपन्यास 'यह अंत नहीं' में भी सामाजिक संघर्ष के अंतर्गत समाज में नारी को किस दृष्टि से देखा जाता है, उसका वर्णन किया है जो इस प्रकार है –

अगम द्वारा चुनिया को बार-बार गलत हरकते करते देख एक दिन चुनिया अगम से गुस्से में आकर बोल ही देती है कि अगर तुम मुझसे इतना प्यार करते हो या मेरे बिना रह नहीं सकते हो तो क्यूं नहीं तुम मेरे साथ विवाह रचा लेते। इस पर वह काफी टालमटोल करता रहा। इस बात को लेकर अगम और उसके एक दोस्त श्री प्रकाश के बीच चर्चा चल पड़ी तो वह साजिशें रच रहे थे। "वह बड़ी मानिनी लड़की है प्रकाश। कुछ भी सलाम नहीं सुनती। बदन पर हाथ रखते ही ऐसे झटक देती है, जैसे बिच्छू का डंक लगा हो। मेरी कोई भी चीज़ नहीं स्वीकारती। सिर्फ बियाह- बियाह कि रट लगाए रहती है ... ।"अगम ने कहा था । जबाब मे श्री प्रकाश ने उसे विश्वास दिलाया था - " सब शुरू- शुरू में ऐसे ही करती हैं। कोई-कोई लड़की ऐसी होती ही है जो ज्यादा समय ले लेती है। लेकिन जैसे भी हो सिर्फ एक बार तू उसे अपने नीचे बिछा दे। फिर देख, उसका सारा मान ढह ना गया तो में अपना नाम बदल दूंगा। फिर तो वह तेरी बाँदी हो जाएगी। यह सौ मर्ज की एक दवा है। नीचे बिछी औरत फिर कभी आँख नहीं मिलाती और नकार में डटी भी नहीं रहती । "[15] इसमे यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार उच्च वर्ग का पुरुष पात्र निम्न वर्ग की नारी को अपनी हवस का शिकार बना लेता है। उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग के घरों की लड़कियों को केवल मनोरंजन की वस्तु ही समझा जाता है। आज के समय में एक नारी की स्थिति इतनी दर्दनाक बन चुकी है कि उसका इस्तेमाल पुरुष वर्ग अपनी हवस को दूर करने के लिए कर रहा है। निम्न वर्ग कि स्थिति तो पहले ही दयनीय होती है कि वो उच्च वर्ग के विरुद्ध कोई आवाज़ नहीं उठा सकता। इसी का लाभ उठा कर उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग का लगातार गलत फायदा उठाते चले जा रहे हैं।

चुनिया जब अगम को उसके कमरे में चाय देने के लिए आती है तो वो उसका रास्ता रोकना चाहता तो, वह अंगारे बरसाती आखों से उसे बरज देती-खबरदार जो मुझे छूने की कोशिश की । एक दिन घर की सारी औरतें पड़ोस में ही कथा सुनने के लिए चली

जाती है परंतु चुनिया अकेली ही घर पर थी। अगम ने ऐसा अवसर पाकर चुनिया को अपने कब्जे में लेने की बहुत ही कोशिश की परंतु चुनिया इस पर ना- नुकर ही करती रही। इस पर अगम को लगा कि समझाने से कोई फायदा होने वाला नहीं, उलटे हाथ आया यह समय भी निकल जाएगा। बस यह कहते हुए वह चुनिया की ओर लपक उठा - "चाहे जो अछरंग लगाओ, जितना गाली- बात दो, पर आज अपनी प्यास बुझाकर ही मानू गा, आज तुझ पर अपनी मोहर लगाए बगैर नहीं छोड़ू गा ... । "[16] इस पर चुनिया काफी चिल्लाती रही लेकिन अगम ने चुनिया को बांहों में जकड़ लिया।

हमारे देश में शुरू से ही लड़की का घर में पैदा होना अभिशाप माना गया है। पहले समय में तो लड़की के जन्म लेने के साथ ही उसको मौत के घाट उतार दिया जाता था परंतु जैसे- जैसे आधुनिकीकरण का युग आया उसमे नारी की स्थिति कुछ हद तक बेहतर हो गयी। परंतु फिर भी कही न कही आज भी स्त्री को पुरुष के समान दर्ज़ा नहीं दिया जाता। उसको घर में अशुभ ही समझा जाता है।

इसी प्रकार 'प्रेमचंद' जी के उपन्यास 'वरदान' में भी नारी की ऐसी ही दशा को दर्शाया गया है- जब नवागता वधु के घर पर आने के उपरान्त घर में घटी प्रत्येक दुर्घटना को उससे जोड़कर उसे अपमानित किया जाता है। वे ऐसा समझते है कि इसी के अशुभागमन से समस्त विपत्तियां आ रही है। 'विरजन' के माध्यम से इन सभी घटनाओं को 'वरदान' मे चित्रित किया गया है। जब विरजन की सास उसे कहती है कि "यही अभागिनी जब से घर मे आयी,घर का सत्यानाश हो गया,उसका पैर बड़ा निकृष्ट है।" [17] स्त्री को समाज में शुरू से ही निम्न दर्जा दिया जाता रहा है। समाज तो नारी का शोषण करता ही रहा है, परंतु नारी स्वयं घर वालों के शोषण का शिकार भी होती है। भारत विभाजन के समय जाने कितनी स्त्रियों- लड़कियों के साथ बलात्कार किये गये, परंतु जब वह संत्रस्त होकर घर लौटी तो घर वालों ने भी उन्हें शरण नहीं दी तथा उनका शोषण ही किया। इसी प्रकर यशपाल जी ने अपने उपन्यास 'झूठा सच' के माध्यम से इसका उदाहरण अंकित किया है जो इस प्रकार है- बंती के साथ भी उसके परिवार वाले ऐसा ही करते हैं। जब वह घर लौटती है तो उसका पति कहता है, "दो महीने मुसलमानों के घर रहकर आयी है, कैसे रख लें? दूर रह, तुझे कह दिया। तू अब हम लोगों के किस काम की?"[18] इस प्रकार स्त्री परिवार वालों द्वारा भी शोषण का शिकार होती है। पुरुष नारी को भोग्या मानकर अपनी अहंकार वृत्ति तथा स्वार्थ भावना के कारण उसे शोषण का शिकार बनाता है।

मिथिलेश्वर जी ने अपने उपन्यास 'यह अंत नहीं' में भी जोखन की सौतेली माँ के माध्यम से नारी की ऐसी दशा का वर्णन किया है। जब जोखन की पहली माँ की मृत्यु हो जाती है तो जोखन के पिता दूसरी शादी करने के लिए मजबूर हो जाते है परंतु जोखन यह सब कुछ नहीं चाहता था क्योकि जिस औरत से पिता ने शादी करनी थी उस औरत के किसी ओर मर्द के साथ नाजायज संबंध थे। उस मर्द ने जोखन के पिता के सामने उस स्त्री की इतनी प्रशंसा कर दी थी कि वह उसके खिलाफ कुछ भी सुनने को तैयार नहीं थे। वह औरत पहले भी शादी-शुदा थी परंतु पहले पति ने उसको छोड़ दिया था। इसी पर पड़ोस की ही नगरौती काकी ने बापू जी से कहा- "ई का कर रहे हो जोखू के बापू..अरे, ऊ औरत नहीं चुडैल है, सात घाट का पानी पीने वाली सतभतरी। बिरजूआ की रखैल ! उसे बिअही बनाकर अपने पैर पर कुल्हाड़ी मत मारो। " [19]

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में शोषित वर्ग पर होने वाले अत्याचार का वर्णन :

हमारे समाज में शुरू से ही यह परंपरा चली आ रही है कि उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग से घृणा करते हैं। निम्न वर्ग के लोगों को समाज में उच्च के समान दर्जा नहीं मिल पाया हैं। उनका किसी ना किसी कारण से शोषण होता आ रहा हैं तथा उनको शारीरिक तथा मानसिक रूप पर ठेस पहुचाई जाती है। जमींदार लोगों ने निम्न लोगों को अपने गुलाम बनाकर रखा हुआ है। बहुत से साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज में जो ये भेदभाव चल रहा है इसको लिखित रूप देकर एक नही दिशा प्रदान की है। आधुनिक साहित्यकार मिथिलेश्वर जी ने भी अपने उपन्यास 'यह अंत नहीं' में भी इस समस्या को उजागर किया हैं जिसका वर्णन इस प्रकार हैं –

चुनिया का बाप नरोतम जब बगीचे में आम तोड़ने के लिए जाता तो चुनिया भी अपने बाप के पीछे- पीछे उस बगीचे में चली जाती तथा जिस प्रकार नरोतम आम तोड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ता वो भी उसके पीछे चढ़ने लग जाती। जब नरोतम मालिक के काम भर आम तोड़कर नीचे उतरता तो देखता कि चुनिया का झोला भी भरा होता। अपने झोले का आम वह किसी को छूने नहीं देती। सीधे अपने घर चली जाती। जब तो श्रवण सिंह वहां होता तब तो वह वहां कोई रोक-टोक का अनुभव नहीं करती परंतु नकटू उसे उल्लू की तरह चिल्लाकर रह जाता - " नरोतम की छोरी .. यह बगीचा तेरे बाप का लगाया नहीं है कि शान से आम ले जा रही है। अबर छोड़ देता हूं, बाकिर आइंदे से इस बगीचे में तुझे

घूसने नहीं दूंगा ... यहां लूट पटार नहीं मचा है कि जो आए और आम लेकर चल दे। जितना आम तू ले जा रही है उतने में एक मजूर को मै दो दिन खटाता ... ! " [20]

अगम द्वारा चुनिया को गलत निगाहों से देखने का गुस्सा अभी शांत नहीं हुआ था वे उसके खिलाफ कुछ और ही सोच रही थी कि अगम की माँ ने चुनिया से कहा "ऐ चुनिया, अगले इतवार को शहर से अगम के दोस्त आ रहे हैं। तुम्हारे कपड़े बहुत पुराने हो गए है और फट गए है। अगम नहीं चाहता कि उसके दोस्त तुमको इन कपड़ो में देखे वे क्या कहेगे कि इस घर की नौकरानी और इस रूप में। इस घर की नौकरानी हो तो तुम्हें इस घर की तरह ही तुझे रहना है ... । " [21]

इसी प्रकार 'प्रेमचंद' जी की कहानी 'मृतकभोज' में भी रेवती अपने ऊपर हो रहे अत्याचार को समझ सकती है-"बिरादरी ने तब हमारी बात न पूछी, जब हम रोटियों को मोहताज थे। मेरी माता मर गयी, कोई झांकने तक न गया। मेरा भाई बीमार हुआ,किसी ने खबर तक न ली। ऐसी बिरादरी के मुझे परवाह नहीं है।"[22] धर्म की आड़ पर शोषण तथा बिरादरी की खोखली रिश्तेदारी को रेवती समझ सकती है, अपनी असहमती प्रकट कर सकती है। लेकिन रेवती आत्महत्या करती हुई चित्रित है।

मिथिलेश्वर जी ने अपने उपन्यास 'यह अंत नहीं' में शोषक वर्ग द्वारा शोषित वर्ग पर किए जाने वाले अत्याचार का वर्णन किया है। नरोतम जब बनिहारी के दिन होते थे तो खाना मालिक के वही से खाता था। उसकी नन्हकी चुनिया भी अपने पिता के साथ खाना खाने के लिए बैठ जाती। श्रवण की पत्नी तो श्रवण की तरह ही समझदार थी। लेकिन दंतुली फुआ को यह बात खटकती रहती। उस फुआ ने भी नकटू की तरह अपनी सारी जायदाद श्रवण को दे दी थी तथा श्रवण के घर अगोरिया में रहने लगी थी। वह चुनिया से कहने लगी- "अरे नन्हकी, रोज बाबू के साथ खाना खाने आ जाती है। तेरा बाबू तो कमाता है तो खाता है, तू क्या करती है ? चल खाना खाकर कुएं से दो बाल्टी पानी निकाल ! " [23]

संदर्भ सूची

1. भूपेन्द्र कलसी, प्रसादोतर कालीन नाटक, पृ॰ 23

2. डॉ. मोहनलाल रत्नाकर :हिन्दी उपन्यास: द्वंद्व और संघर्ष, पृ ॰ 22

3. Olsen, The process of social organization, P- 310

4. Weber, The theory of social and economic organization,

P- 132

5. श्री रामशरण जोशी. समयांतर, पृ॰ 2

6. मिथिलेश्वर, 'यह अंत नहीं' , पृ॰- 64

7. वही पृ॰ – 120

8. जयशंकर प्रसाद, स्कंदगुप्त,(3,221,1- 4)

9. मिथिलेश्वर, 'यह अंत नहीं', पृ॰-113

10. वही पृ॰ – 55

11. वही पृ॰ – 147

12. सं॰ नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली-2, पृ॰-161

13. मिथिलेश्वर,'यह अंत नहीं', पृ॰- 10

14.राधामोहन गोकुल, स्त्रियों की स्वाधीनता, पृ॰- 20

15. मिथिलेश्वर, 'यह अंत नहीं', पृ॰-32

16. वही पृ॰ – 35

17. प्रेमचंद, 'वरदान',पृ॰- 115

18. यशपाल, झूठा सच भाग-2, पृ॰-47

19. मिथिलेश्वर,'यह अंत नहीं', पृ॰-115

20. वही पृ॰ – 12 – 13

21. वही पृ॰ – 22

22. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग आठ, पृ॰- 7

23. मिथिलेश्वर,'यह अंत नहीं',पृ॰- 11

अध्याय तीन

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित आर्थिक संघर्ष

जीवन संघर्षो से गूंथी हुई माला के समान है। जिस प्रकार दूध में मक्खन घुला-मिला होता है और मक्खन निकलने से वह दूध नहीं रह जाता, इसी प्रकार हमारे जीवन में भी संघर्ष घुले- मिले हैं। आज का युग आधुनिक युग है। आज के समाज में अर्थ का विशिष्ट महत्व रहा है। अर्थ के आभाव में व्यक्ति और समाज दोनों का विकास रुक जाता है। आधुनिकीकरण के कारण अर्थ की महत्ता बढ़ती जा रही है, अर्थ ही आज के इंसान के लिए महत्वपूर्ण बन कर रह गया है, आज रिश्ते- नाते खत्म होते जा रहे हैं। आधुनिक युग में यह माना गया है कि जो देश आर्थिक तौर पर मजबूत है वही देश अधिक शक्तिशाली है। भारत बहुत ही विशाल देश है। अंग्रेज़ो के आगमन के बाद भारत आर्थिक तौर पर कमजोर हो गया। अंग्रेज़ विदेशों से आकार भारत में व्यापार करने लगे तथा इस प्रकार भारत का पैसा विदेशों को जाने लगा जिससे की भारत देश का आर्थिक व्यवस्था का स्तर नीचे गिर गया तथा अर्थ के कारण समाज में दो वर्ग बन गये- पूंजीपति वर्ग तथा मजदूर वर्ग। अर्थ के कारण ही इन दोनों वर्गो में समझौता कभी भी सम्भव नहीं है। उच्च वर्ग निरंतर निम्न वर्ग पर अत्याचार करता आ रहा है। "मनुष्य के सर्वागीण विकास में व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्वतन्त्रता भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। आधुनिक युग में अर्थ परम पुरुषार्थ बनकर सुख का आधार रह गया है पूंजीवादी युग में पैसा ही हर वस्तु का मूल्य निर्धारित करता है। इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति अधिकाधिक अर्थोपार्जन करके अपने अस्तित्व और व्यक्तित्व को सुखी सम्पन्न करना चाहता है।"[1] आज के समय में आपसी संबंध भी आर्थिक स्थिति को देखकर ही स्थापित किया जाता हैं। समाज में निम्न वर्ग की आर्थिक दशा इतनी दयनीय हो गयी है कि वह अर्थ के कारण उच्च वर्ग के गुलाम बनकर रह गये हैं। डॉ. जनेश्वर वर्मा ने भी संघर्ष के लिए आर्थिक परिस्थितियों के ज़िम्मेवार होने के संबंध में कहा है - "सामाजिक परिस्थितियां उत्पादन के ढंग अथवा आर्थिक परिस्थितियों द्वारा निर्धारित होती हैं। आर्थिक परिस्थितियां ही समाज में विभिन्न श्रेणियों और संघर्षो के स्वरूप को निर्धारित करती हैं।"[2] जीवन के संघर्ष में हरेक व्यक्ति पिसता रहा। बढ़ती महंगाई के कारण आज परिवार बिखर रहे है, परिवार के सभी सदस्य अर्थ प्राप्ति के लिए तितर-बितर हो रहे है। आज के समय में व्यक्ति की जरूरतें बढ़ती जा रही है तथा अधिक मंहगाई होने के कारण व्यक्ति अपनी जरूरतों को पूरा नहीं कर पाता। परिवार के सभी सदस्यों के कमाने के बावजूद भी परिवार अपनी जरूरतें पूर्ण नहीं कर पाता। डॉ. माधव सोनटक्के लिखते हैं,"अर्थ का आभाव और निरंतर बढ़ती जरूरतें दोनों में मेल न होने के

कारण व्यक्ति अतिरिक्त धन प्राप्ति के लिए बुरे मार्ग भी बेहिचक अपनाता जा रहा था। सरकारी कार्यालयों में व्याप्त भ्रष्टाचार, घूसखोरी, राजनीति के क्षेत्र में व्याप्त अनाचार, वाणिज्य-क्षेत्र में व्याप्त-साठेबाजी अर्थकेन्द्र जीवन दृष्टि के ही विकृत पहलू है।"[3]

हिन्दी साहित्य में बहुत से ऐसे साहित्यकार हुए हैं, जिन्होने भारत की आर्थिक स्थिति को जनसमक्ष प्रस्तुत करने का यत्न किया इन साहित्यकारों पर उस समय मार्क्सवाद का प्रभाव ज्यादा देखने को मिलता है। बहुत से साहित्यकार ऐसे हुए है जिन्होने मार्क्सवाद से प्रभावित होकर अपने साहित्य का सृजन किया। एक साहित्यकार ही ऐसा होता है जो समाज में जो वास्तविक रूप से चल रहा है उसको जनता के समक्ष प्रस्तुत करता है। मार्क्स के अनुसार,"काव्य का स्रष्टा कोई स्वप्र द्रष्टा मानव नहीं बल्कि दैननिन्दन जीवन के संघर्षो में संलग्र, आर्थिक परिस्थितियों से पूर्णत: प्रभावित और उनसे जूझता हुआ यथार्थवादी मानव है।"[4] हिन्दी साहित्य में बहुत से साहित्यकार हुए है जिन्होने जीवन के यथार्थ रूपी चित्र को प्रस्तुत किया है। यशपाल, मुंशी प्रेमचंद जी ने इसका बहुत ही सशक्त वर्णन किया हैं। आधुनिक साहित्यकार मिथिलेश्वर जी ने अपने उपन्यास 'यह अंत नहीं' में भी आर्थिक संघर्ष को बहुत ही संजीव ढंग से अंकित किया है। उन्होने आर्थिक संघर्ष के अंतर्गत गरीबी, बेरोज़गारी, लूटपाट आदि को अपने उपन्यास में दर्शाया है जो कि इस प्रकार है-

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित गरीब जनता की स्थिति का वर्णन:

गरीबी, दास की उस स्थिति की तरह होती है, जब व्यक्ति अपनी इच्छानुसार कुछ भी करने में असक्षम होता है। गरीबी के कारण ही व्यक्ति सुख सुविधाओं से वंचित रह जाता है। ये एक अदृश्य समस्या है, जो एक व्यक्ति और उसके सामाजिक जीवन को बुरी तरह प्रभावित करती है। गरीबी आगे बहुत सी समस्याओं को जन्म देती है। शिक्षा प्राप्त करने, अच्छा भोजन अर्जित करने के लिए गरीबी एक आह्वान है। गरीबी को एक अभिशाप माना गया है। गरीब की सारी जिन्दगी जीवन की सारी सुख सुविधाओं को अर्जित करने में ही निकल जाती है। उसका सारा जीवन संघर्ष में ही निकल जाता है। गरीब व्यक्ति को समाज में समान दर्जा नहीं दिया जाता। सारा दिन काम करने के बावजूद भी उसे दो वक्त की रोटी की चिंता होती है। वह न तो अपने परिवार की तथा न ही अपनी जरूरतों को पूरा कर सकता है। हिन्दी साहित्य में बहुत से ऐसे साहित्यकार हुए हैं, जिन्होने इस समस्या पर

बहुत ही गम्भीर चिंतन किया है। इसी प्रकार आधुनिक साहित्यकार मिथिलेश्वर जी ने भी अपने उपन्यास में भी इसको इस प्रकार प्रस्तुत किया हैं-

नरोतम जब यह देखता था कि उसके मालिक श्रवण सिंह के बच्चे शहरों में जाकर बड़े- बड़े स्कूलों में पढ़ते है- " तो दोनों पति पत्नी ने चाहा था कि गांव के बड़े-लोगों के बच्चों की तरह अपने बच्चों को भी वे पढ़ाए। उनका जीवन तो बनिहारी में कट रहा है। उनके बच्चों का जीवन तो सवर सके ! उन दोनों पति-पत्नी ने खूब मन बनाकर बुंतु और चुनिया का नाम गांव की पाठशाला में लिखा दिया था। लेकिन वो एक दो वर्ष से ज्यादा वहां टिक नहीं सके। स्कूल ड्रेस में न जाने तथा कापी किताब लेकर न आने पर मास्टर उन्हे मारता-और स्कूल से निकाल देते। उनके माँ-बाप की ऐसी स्थिति नहीं होती की तत्क्षण स्कूल की मांग को पूरा कर दें। "[5] मिथिलेश्वर जी ने गरीब व्यक्ति की दयनीय दशा को व्यक्त किया है। उनका कहना है कि गरीब व्यक्ति चाह कर भी अपनी जरूरतों को पूरा नहीं कर सकता।

इसी प्रकार की उदाहरण सर्वेश्वर के काव्य में मिलती है उनका कहना है कि किस प्रकार गरीब किसानों को, मज़दूरों को, दलितों को और शोषित महिलाओं को रोजी-रोटी से भी मोहताज होना पड़ता है। उन्होने एक ऐसी स्त्री की स्थिति को बयान किया है जो सारा दिन काम करने के बाद भी अपने बच्चों को कपड़ा भी नहीं दे पाती तथा उनको भर पेट खाना तक भी नसीब नहीं हो पाता। उनको खाने के लिए जो मिलता है उसका वर्णन है-

"और शाम को मक्के की रोटी

और नरई का साग अगोरते है। " [6]

सर्वेश्वर जी ने इन पंक्तियो में यह दर्शाया है कि मध्य वर्ग का स्तर इतना नीचे घिर गया है कि वह चाहकर भी अपनी जरूरतों को पूरा नहीं कर सकता। गरीब व्यक्ति के लिए तो दो वक्त की रोटी खानी भी एक समस्या बन कर रह गयी है। गरीबी इतनी बढ़ गयी है कि यदि परिवार के सभी सदस्य भी काम करे तो भी गुजारा काफी मुश्किल से होता है इसी पर जोखन के पिता जब नई माँ ले आते है तो जोखन चाहता हैं कि वो भी बापू की तरह यह माँ भी काम पर चली जाए। आस- पड़ोस की दो- तीन औरतें जाती थी। इस वारे में जोखन जब बापू से चर्चा कर रहा था तो उसने कान लगाकर सुना था - बापू ने ज़ोर देकर कहा था -"इस महंगाई में अकेले की कमाई से घर-खर्च की भरपाई मुश्किल पड़ रही है सिताबो । जब जोखू की माँ जइसा तू भी काम पकड़ लेगी, हम दोनों बेकत फेरु कमाने लगेगें, तभी हम बढ़िया खा-पहन सकेगें । तभी उजिआएंगे । " [7] गरीब व्यक्ति की स्थिति इतनी दयनीय हो गयी है कि आज के युग में रोजी-रोटी का प्रश्न भी बहुत ही भयंकर समस्या बन गया है। यह समस्या

ज़्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों में अपना विकराल रूप धारण कर बैठी है। अर्थ की महत्ता बढ़ने से जो आर्थिक असमानता फैल रही है उसमे तो जो व्यक्ति गरीब है वो तो दिन-प्रतिदिन और गरीब होता जा रहा है परंतु जो व्यक्ति तो पैसे वाला है या जिसके पास उत्पादन के सभी साधन उपलब्ध है वो और अमीर होता जा रहा है। साधन सम्पन्न वर्ग ने गरीब व्यक्तियों की दशा इतनी दयनीय कर दी है कि वो रोटी तक खाने के लिए मोहताज है। सर्वेश्वर ने अपने काव्य में गरीबी, भूख व रोजी-रोटी का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया है। सर्वेश्वर 'चुपाई मारौ दुल्हिन' नामक कविता के माध्यम से ऐसे ही दर्द को व्यक्त किया है। एक औरत गरीबी के कारण अपनी इज्जत तक देने को मजबूर हो जाती है परंतु इतना करने के बाद भी उसको रोटी नहीं मिल पाती। उदाहरण इस प्रकार है-

"द रोटी !

कहां गयी थी बड़े सवेरे

कर चोटी

लाला के बाजार में मिली दुअन्नी

पर वह निकली खोटी,

दिन भर सोयी,

बीच बाजार में बैठकर रोयी,

साँझ को लोटी

ले खाली कौआ। "[8]

इस उदाहरण के माध्यम से गरीब औरत की व्यथा को व्यक्त किया गया है। इसी प्रकार मिथिलेश्वर ने अपने उपन्यास में गरीबी का वर्णन बहुत ही मार्मिक ढंग से किया है। जब जोखन और चुनिया का बबुआ किसी कारणवश पानी में डूब जात है तो अंत में उसकी मौत हो जाती है तो चुनिया जोखन से बोलती है कि अगर हमारे पास चार पैसे होते तो हम अपने बबुआ को कही न जाने देते। इस प्रकार आज के समय में अर्थ कि बहुलता ज्यादा बढ़ गयी है। अर्थ के कारण ही व्यक्ति अपनी जरूरतों को पूरा कर सकता है अन्यथा नहीं। उदाहरण इस प्रकार है- चुनिया द्वारा जोखन को निर्णायक अंदाज में यह कहा -"हमारी हालत ऐसी तंगहाल नहीं होती तो यह सब काहे होता? सब गरीबी के चलते ही हुआ है। तालाब की

अगोरिया से दोनों जून हम खा भर लेते हैं, यह भी कोई जीवन है? और लोगन जैसा हमारे हाथ पर पैसे होते तो हमार बबुआ भी नहीं जाता। हम भी उसे लेकर बढ़िया घर में रहते। तालाब के किनारे घाम सेकने नहीं निकालते। तालाब के इस कुलक्षण घर में तो हम दिन काटते है। हम इंहवा नहीं होते तो वह आफत नहीं आती। सब तकलीफ, सब मुसीबत हमीं नहीं झेलते। अब भी हमें चेत जाना है। अब सेठ के दरमाहे हमें नहीं बैठना। तू तालाब अगोरना, मैं गांव मेँ चौंका-बर्तन पकड़ लूंगी। दोनों बेर खाना बनाने के बाद टैम ही टैम है ! हाथ पर पैसे आएंगे तो फिर कभी वैसा नहीं होगा अपना सब दुख दलिद्दर हम भगा देगे। मौका-बखत खातिर कुछ जोगा के भी रखेगे। तोहरे अकेले की कमाई से कुछ होने वाला नहीं है ।"[9] मिथिलेश्वर जी ने इसके माध्यम से जीवन में पैसे की कितनी एहमियत है उसको अंकित किया है।

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित बेरोज़गारी की समस्या का वर्णन :

प्राचीन काल में भारत आर्थिक दृष्टि से पूर्णत: सम्पन्न था। तभी तो यह 'सोने की चिड़िया' के नाम से विख्यात था। किन्तु, आज भारत आर्थिक दृष्टि से विकासशील देशों की श्रेणी में है। आज यहां कुपोषण और बेरोज़गारी है। आज हमारे देश में जो अव्यवस्था व्याप्त है, उसकी जड़ में बेरोज़गारी की समस्या विकराल है। लूट-खसोट, छीना-झपटी, चोरी-डकैती, हड़ताल आदि कुव्यवस्थाएं इसी समस्या के दुष्परिणाम हैं। आधुनिकीकरण के युग में विज्ञान ने बहुत ही तरक्की कर ली है जो काम पहले समय में दस व्यक्ति करते थे आज उन दस व्यक्तियों का काम केवल एक मशीन द्वारा किया जाता है। इससे आम आदमी के जीवन पर बहुत बढ़ी चोट पहुंची है। जिसके कारण बहुत से किसान, मजदूर बेरोजगार हो गये है। बेरोज़गारी का अभिप्राय है – काम करने योग्य इच्छुक व्यक्ति को कोई काम न मिलना। भारत में बेरोज़गारी के अनेक रूप हैं। बेरोज़गारी में एक वर्ग तो उन लोगों का है, जो अशिक्षित या अर्द्धशिक्षित हैं और रोजी-रोटी की तलाश में भटक रहे हैं। दूसरा वर्ग उन बेरोजगारों का है जो शिक्षित हैं जिसके पास काम तो है, पर उस काम से उसे जो कुछ प्राप्त होता है, वह उसकी आजीविका के लिए पर्याप्त नहीं है। बेरोज़गारी की इस समस्या से शहर और गांव दोनों आक्रांत हैं। स्वतंत्र भारत अल्प विकसित विकासशील देश है। इस लिए भारत में बेरोजगारी का स्वरूप औद्योगिक दृष्टि से विकसित देशों की अपेक्षा भिन्न है। लार्ड कीन्स

के अनुसार-"विकसित देशों में बेरोजगारी का मुख्य कारण प्रभावी माँग की कमी है। आय में कमी होने से माँग में कमी हो जाती है जिसके फलस्वरूप मशीनें खाली पड़ी रहती है। और बेरोजगारी उत्पन्न हो जाती है। भारत में इस प्रकार की बेरोजगारी 1929 की विश्व मंदी और 1966 व 1975 के औद्योगिक अवसाद के समय हुई थी। परंतु भारत में समान्यतया बेरोजगारी का मुख्य कारण जनसंख्या की अधिकता ओर पूँजी की कमी है।"[10] भारत जैसे देश में गरीबी और बेरोजगारी दोनों एक सी समस्याएं है। यह समस्या दिन-प्रतिदिन विकराल रूप धारण करती जा रही है। जो आज के समय में बेरोजगारी की समस्या इतनी बढ़ गयी है कि परिवारों के परिवार बिखरते जा रहे है। बेरोजगारी शहरों और गांवों में इतनी बढ़ गयी है कि 10 में से 9% भाग बेरोजगारों का ही है। बेरोज़गारी की समस्या ने आगे ओर बहुत सी गंभीर समस्याओ को जन्म दिया है जैसे कि चोरी, डकैती, लूटपाट आदि। हिन्दी साहित्य में बहुत से साहित्यकार ऐसे हुए है जिन्होने अपनी रचनाओ के माध्यम से बेरोज़गारी की समस्या का वर्णन किया है। उनमे से आधुनिक साहित्यकार मिथिलेश्वर जी ने भी अपने उपन्यास 'यह अंत नहीं' में भी इसी समस्या को दर्शाया है जो कि इस प्रकार है-

जब चुनिया बड़टोली की गली में से से तेजी से जाती है तो वह अपने आप को बहुत ही अकेला महसूस करती थी। उस गली के दालान-दुआर पर खड़े- बैठे लोग उसे बुरी नजर से देखते थे। काम न मिलने की वजह से वह बेरोजगार थे। सारा- सारा दिन जो लोग आते जाते थे उनको देखने में ही बिता देते थे। परंतु चुनिया उन छोकरों की बिल्कुल भी परवाह नहीं करती थी। रमण सिंह के छोकरों ने उसे देखते ही बोल बोलना शुरू कर दिया - "अरे, यह देखो ! आ गई नैनतारा। हम तो इसी की अगवानी में बैठे थे। भगवान ने गजब की उठान दी है। एक बार आँख मिला दे तो फिर मोती बरस उठे..... ! "[11] बेरोजगारी के पीछे सबसे बड़ा कारण यही है कि लोग ज्यादा से ज्यादा उच्च शिक्षा ग्रहण करते जा रहे है परंतु इसके बावजूद भी उनके लिए रोज़गार के साधन पूरी तरह से उपलब्ध नहीं हो पाते। इसी प्रकार की एक उदाहरण 'कसूर' नामक कहानी में मिलती है। यह कहानी बेरोजगार ग्रामीण नवयुवक की है जो इंटरव्यू दे देकर थक जाता है परंतु उसको कही भी नौकरी नहीं मिलती। उसकी गैरहाजिरी में पुलिस वाले उसके घर उसको पकड़ने के लिए आ जाते है। उसके गांव वाले लोग तो उसको डकैती से जुड़ा हुआ मानते हैं। इसी तरह गरीब डोम नटवर को भी हर चोरी में पुलिस पकड़ ले जाती थी। उसके पूछने पर नटवर ने उत्तर दिया था-"बबुआ जी, मैं गरीब होते हुए भी शरीर से तगड़ा हूं न, इससे बड़ा कसूर और क्या हो सकता है दुनिया में?"[12] इसमे शिक्षित ग्रामीण नवयुवक की बेकारी जन्य व्यथा को वाणी देने वाली यह कहानी महत्वपूर्ण है।

इसी प्रकार प्रियदर्शी प्रकाश की कहानी 'अपुत्र' में पिता की मृत्यु हो गई है,और पुत्र को यही चिंता लगी है कि पिता की लाश के साथ में कीमती अँगूठी और घड़ी भी कही लाश के साथ ही न जला दी जाये। उसे कोई दूसरा न प्राप्त कर ले। वह कहता है -"घड़ी का क्या होगा। उसने सोचा क्या वह लाश के साथ ही जला दी जायेगी।" [13] और अंत में वह मौका पाकर लाश के हाथ से घड़ी और अँगूठी उतार लेता है। तभी उसे संतोष होता है। इसका कारण उसकी बेरोज़गारी है। उसको कोई काम नहीं मिलता तो वह सोचता है कि इस घड़ी तथा अँगूठी से ही अपना गुजारा चला लेगा। बेरोज़गारी की समस्या इतनी गंभीर बन गई है कि पैसे के अभाव में पैसा मानवीय संबंधो की संवेदना पर छा गया है। आज का व्यक्ति पैसे की होड में कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। रिश्तों की कोई भी अहमियत नहीं रह गई है। पैसे के कारण ही व्यक्ति- व्यक्ति का शोषण करने लगा है इसी प्रकार मिथिलेश्वर जी ने अपने उपन्यास 'यह अंत नहीं' में भी ऐसी उदाहरण मिलती है –

जब बेरोज़गारी बढ़ जाती है तो कोई काम जब नहीं मिलता तो छोकरें आवारा ही घूमते है। तीन-तीन की संख्या में बंटे छोकरों ने अपनी तैयारी के अनुसार नरोतम पति-पत्नी और बुंतु का गला पकड़ लिया तथा उनके मुंह के पास पिस्तौल जैसी कोई चीज़ सटाकर क्रूर आवाज़ में कहा - "अगर अपने मुंह से एक लब्ज भी निकालने की कोशिश की और उठना चाहा तो बस यहीं बिछावन पर ही ढेर कर देगें। सीधे पहुंचा देगे उस गांव पर ॥ ! " [14]

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित लूटपाट से आवश्यकता पूर्ति का वर्णन :

लूटपाट का अर्थ है लोगों को मार-पीट कर उनका धन छीनना तथा उनका हरण करना। लूटपाट, डकैती आदि समस्याओं के पैदा होने का सबसे बड़ा कारण अर्थ ही है क्योकि आज के समय में अर्थ की महत्ता ज्यादा बढ़ गयी है। आधुनिक समय में लोगों की आवश्यकताएं ज्यादा बढ़ है परंतु इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मनुष्य के पास धन का आभाव है। इसी लिए आज का युवा वर्ग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए गलत रास्तों का चुनाव कर रहा है। आज का आदमी इतना शिक्षित हो चुका है परंतु फिर भी उसको रोज़गार नहीं मिल रहा। इसीलिए आधुनिक समय में लूटपाट, चोरी, डकैती, बलात्कार, कत्ल आदि जैसी समस्याएं इतनी बढ़ गयी है कि व्यक्ति-व्यक्ति का ही हरण किए जा रहे है।

हिन्दी साहित्य में बहुत से साहित्यकार ऐसे हुए है जिन्होने इन भयानक समस्याओं जैसे कि चोरी, लूटपाट, डकैती आदि को अपनी रचनाओं के माध्यम से जनता के समक्ष उसको लेखनी का रूप देकर प्रस्तुत किया है। इनमे में से मिथिलेश्वर भी ऐसे साहित्यकार हुए है जिन्होने लूटपाट की इस गम्भीर समस्या को अपने उपन्यास 'यह अंत नहीं' में इस प्रकार अंकित किया है- बुंतु जा बाग में से वापिस गुजर रहा था तो अचानक ही धड़ाम-धड़ाम की आवाज़ आनी शुरू हो गयी तथा साथ ही पेड़ों की डालियों पर छिपे बैठे लोग उसकी और लपक उठे। वह इस बात पर हैरान हो गया था कि यह बड़टोली के ही आवारा छोकरें हैं। इनकी संख्या चार थी। इनमे से एक के हाथ में पिस्तौल थी। यह छोकरें लूटपाट करने के लिए वहां पर बैठे हुए थे कि किस समय कोई यहां से गुजरे तो हम उनको लूटे। परंतु जब बुंतु खेत में से जाने लगा था तो उसके हाथ में डंडा था इसके कारण उसका काफी ज्यादा बचाव हो गया। बुंतु अपनी बहन पर होते जुल्म को बिल्कुल भी सहन नहीं कर रहा था बुंतु किसी भी प्रकार उस डंडे के कारण बच निकला अगर उसके पास डंडा न होता तो उन्होने चारों और से घेरा डाल लेना था। जब बुंतु अपने बचाव के लिए भाग गया तो वो भी पीछे-पीछे भाग रहे थे और भागते हुए कह भी रहे थे -"पैर में गोली मारो पैर में, नहीं तो निकल भागेगा।"[15]

इसी प्रकार मिथिलेश्वर की ही कहानी 'उम्रकैद' डकैती और सेंधमारी करनेवाले डकैत सरना की कहानी है। सरना एक निम्न वर्गीय व्यक्ति है, जो चोरी करना नहीं चाहता किन्तु समाज में व्याप्त विसंगतियों के कारण वह चोरी करता है। चोरी करते समय पकड़े जाने पर दारोगा से कुछ बड़े लोगों का नाम बताता है तो उसे और भी प्रताड़ित किया जाता है। जब वह छोटे लोगों का नाम बताता है तो उसे छोड़ दिया जाता है -"चोरी तो कौन नहीं करता है। सिर्फ मोटे मेंही का ही सवाल है। वह मोटे लोग से करता है और लोग मेंही ढंग से करते है लेकिन करते सभी है। मुखिया, सरपंच, बीडिओ, दुकानदार कौन इससे अलग है ? चोरी, चमारी, घुसखोरी से अलग आज कोई पेशा है ही नहीं। "[16] सरना के लिए चोरी का पेशा उम्रकैद है क्योकि उसके लिए आजीविका का कोई साधन नहीं है। इसी प्रकार की एक और उदाहरण मिथिलेश्वर के उपन्यास 'यह अंत नहीं' में मिलती है। जब श्रीवास्तव जी का बेटा आदित्य दस-ग्यारह बजे के करीब लघुशंका के लिए उठा था तो उनकी पत्नी उसको आँगन में बनी नाली के पास ले गयी थी। लघुशंका के बाद बेटे के साथ निकसार वाले कमरे में उनके वापिस आते ही आँगन में दुबके-छिपे दो मुस्टंड चोर अपने हाथों में घातक हथियार लिये उनके समक्ष आ खड़े हुए थे-"ऐ लालाइन, रुपए और गहने जहां रखे हों जल्दी से बता दो और तनिक भी चू-चापड़ मत करो नहीं तो बच्चों समेत काटकर यहीं ढेर कर देंगे ! "[17]

संदर्भ सूची

1. राजेन्द्र यादव,एक दूनिया समानन्तर , पृ॰ 34

2. डॉ. जनेश्वर वर्मा,हिन्दी काव्य में मार्क्सवादी चेतना, पृ॰ 84

3. डॉ. माधव सोनटक्के, अशोक हजारे, समकालीन परिवेश और प्रासंगिक रचना संदर्भ,पृ॰11

4. सिंधुमोल अय्यप्पन, अमृतलाल नागर के उपन्यासों में आधुनिकता, पृ॰-164

5. मिथिलेश्वर, ' यह अंत नहीं ' , पृ॰-14

6. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, कुआनो नदी, पृ॰-47

7. मिथिलेश्वर, 'यह अंत नही' पृ॰-118

8. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, कुआनो नदी,पृ॰-48

9. मिथिलेश्वर, 'यह अंत नही' पृ॰- 224

10. रस्तोगी एवं राव, भारत में आर्थिक विकास एवं नियोजन, पृ॰-111-112

11. मिथिलेश्वर, 'यह अंत नही' पृ॰- 44

12. मिथिलेश्वर,'कसूर', पृ॰-84

13. प्रियदर्शी प्रकाश, अपरिचित का परिचय, पृ॰- 67

14. मिथिलेश्वर, 'यह अंत नही' पृ॰- 65

15. मिथिलेश्वर, 'यह अंत नही' पृ॰- 78

16. मिथिलेश्वर, 'दूसरा महाभारत', पृ॰- 47

17. मिथिलेश्वर, 'यह अंत नहीं', पृ॰- 236

अध्याय चार

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित राजनीतिक संघर्ष

राजनीतिक संघर्ष का सम्बन्ध राज्य से होता है। राज्य का अर्थ है,"राजनीतिक दृष्टि से संगठित समाज, अर्थात निश्चित क्षेत्र में बसे मानव समाज का ऐसा संगठित रूप जिसने सार्वजनिक मामलों के प्रबन्ध और नियन्त्रण के लिए निश्चित संस्थाएं बना ली हों, उस क्षेत्र में सम्पूर्ण वैध शक्ति पर उन्हीं संस्थाओं का अधिकार और नियन्त्रण हों और वे संस्थाएं अपने क्षेत्र में अपने बनाए हुए कानून और आदेशों का पालन कराने में समर्थ हों।" [1] इस परिभाषा से यह ज्ञात होता है कि राज्य लोगों का एक ऐसा संगठित समुदाय होता है जो एक निश्चित भू-भाग या प्रदेश में निवास करता है जो अपनी सुसंगठित सरकार के आदेशों का पालन स्वाभाविक रूप से करता हों और इसके अतिरिक्त जो पूर्ण रूप से प्रभुसत्ता सम्पन्न भी हों अर्थात जिसके आंतरिक तथा बाहरी मामलों में कोई भी अन्य सत्ता हस्तक्षेप न करे। राजनीतिक संघर्ष को स्पष्ट करने के लिए 'राजनीति ' शब्द का अर्थ स्पष्ट करना अनिवार्य है। "राजनीति अध्ययन की वह शाखा है जिसमें राजनीति (Politics) का वैज्ञानिक पद्धति से विवेचन किया जाता है। परंपरागत राजनीति में एक और राज्य के अंगों और संस्थाओं का विवरणात्मक अध्ययन किया जाता था जिसमें अनेक औपचारिक स्वरूप तथा शक्तियों को प्रधानता दी जाती थी। दूसरी ओर उसमें राजनीति के आदर्शो, मूल्यों और मान्यताओं से संबन्धित विचारों की जानकारी प्राप्त की जाती थी। आधुनिक राजनीति विज्ञान के प्रवर्तकों ने राजनीतिक जीवन के औपचारिक तत्वों को प्रधानता देते हुए मुख्यत: राजनीतिक प्रक्रियाओं को राजनीति का अध्ययन विषय बनाया और राजनीतिक संस्थाओं को भी इन प्रक्रियाओं की नियमित अभिव्यक्ति मानकर समझाने का प्रयत्न किया।" [2] राजनीतिक संघर्ष से अभिप्राय विभिन्न राजनीतिक दलों अथवा राजनीतिक लोगों की आपसी टकराहट से है, जो राजनीति में आने या अपनी पार्टी की स्थिति मजबूत करने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहते हैं। एक राजनीतिक पार्टी अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए अनेक तरीके अपनाती हैं। एक राजनीतिक पार्टी अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए अनेक तरीके अपनाती है और दूसरी पार्टियों की अनेक प्रकार से आलोचना करती है। एक दल या पार्टी से जुड़ा हुआ नेता अपनी पार्टी या दल को मजबूत करने के लिए पार्टी और लोगों के हित में काम करके अपनी स्थिति मजबूत करने का प्रयास करता है। इस प्रकार विभिन्न दलों अथवा पार्टियों में राजनीतिक संघर्ष जारी रहता हैं। चुनावों के समय में तो राजनीतिक संघर्ष बहुत बढ़ जाता है। एक पार्टी दूसरी पार्टी के विरुद्ध जमकर नारेबाजी करती है और अपनी पार्टी को मजबूत

करने का प्रयास करती हैं। पहले तो अंग्रेजों ने भारत को खूब लूटा परंतु आज के समय में भारत के लोग ही जनता को लूटी जा रहे है। लोकतंत्र के नाम पर भारतीय जनता को लूटा जाता है। राजनीतिक दल इतने अवसरवादी तथा भ्रष्ट हो गये है कि पहले तो वह चुनाव के दिनों में आम जनता से बड़े-बड़े वायदे करते है परंतु जैसे ही चुनाव हो जाते है तो वह किये हुए सारे वायदों को भूल जाते है तथा आम जनता कि उम्मीदों पर पानी फेर देते हैं। राजनीतिज्ञों की ऐसी कूटनीति का वास्तविक रूप साहित्यकार अपनी कलम के माध्यम से जनता के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हिन्दी साहित्य में बहुत से ऐसे साहित्यकार हुए है जिन्होने राजनीति के वास्तविक रूप को जनता के सामने उजागर करने का प्रयास किया है और यह साहित्यकार काफी हद तक सफल हो पाये है। इन्हीं साहित्यकारों के बीच एक नाम साहित्यकार मिथिलेश्वर जी का भी है। मिथिलेश्वर जी ने अपनी रचनाओं में राजनीति को बहुत ही नजदीक से देखा। मिथिलेश्वर जी ने अपने उपन्यास में राजनेताओं की भ्रष्ट नीतियों के बारे में जनता को अवगत करवाने का प्रयास किया है। मिथिलेश्वर जी ने नेताओं की भ्रष्ट नीति और अवसरवादी नीति को अपने उपन्यास के माध्यम से जनता के समक्ष प्रस्तुत किया है। तथा उन्होने आम लोगों की वेदना को प्रकट किया है।

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित अवसरवादी व्यवस्था का वर्णन:

अवसर से अभिप्राय है- 'मौके की तलाश' से है । 'मानक हिन्दी कोश' के अनुसार,"मौके से फायदा उठाने की प्रवृति।"[3] अत: उचित समय देखकर उस समय का फायदा उठाकर लाभ अर्जित करना अवसरवादिता कहलाता है। आज के समय में व्यक्ति में अवसरवादिता व्याप्त रूप में विद्यमान है। आधुनिक समय में प्रत्येक व्यक्ति मौके का लाभ उठाना चाहता है। व्यक्ति को दूसरों के लाभ-हानि से कोई मतलब नहीं है। प्रशासनिक अधिकारियों में तो यह वृति बड़े पैमाने पर देखी जा सकती है। नेता लोग तथा प्रशासनिक अधिकारी अपने पद का उचित लाभ उठाते हैं। साहित्यकार मिथिलेश्वर जी ने अपने साहित्य के माध्यम से आधुनिक युग के राजनेताओं की अवसरवादिता को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। मिथिलेश्वर जी ने आधुनिक युग के ऐसे नेताओं का वर्णन अपने साहित्य के माध्यम से किया है जो केवल चुनाव के दिनों में ही आम जनता से बड़े-बड़े वायदे करते है परंतु बाद में अपना मतलब निकलते ही वह किये हुए सारे वायदों को भूल जाते है तथा आम जनता के सपनों पर पानी फिर जाता है। मिथिलेश्वर जी के ऐसे बहुत से उपन्यास है जिनमें राजनीतिक दलों की अवसरवादी नीति को दर्शाया गया है। इसी प्रकार मिथिलेश्वर जी ने

अपने उपन्यास 'यह अंत नहीं' में राजनेताओं की इसी अवसरवादी नीति का वर्णन किया है कि किस प्रकार नेता लोग अपना स्वार्थ निकालने के लिए आम जनता को अपने चंगुल में फसाने का प्रयास करते है। जब जोखन कल्लन सेठ की इमारत बनाते समय छत से गिर जाता है तो उसका सारा इल्जाम सेठ पर ही पड़ जाता है। जो सेठ की इमारत बन रही थी वह भी स्थगित हो ही गयी। पुलिस के लोगों ने सेठ के मकानों और दुकानों को घेराव डाल दिया था जब इस बात का पता जब सेठ को पता चला तो शहर के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले लोग चुनिया और जोखन को सेठ का संदेश देने के लिए आए। उनका कहना है कि - "तुम्हारे नाम पर आंदोलनकारी जो कर रहे है, वह अपनी रोटी सेंक रहे है। तुम भोले-भाले ग्रामवासी हो, ऐसे राजनीतिज्ञों को नहीं पहचान पाओगे ! यह किसी के नहीं होते। इनका कार्य कहीं और होता है और निशाना कहीं और रहता है ! तुमको माध्यम बनाकर सेठ जी को लूटने का अवसर इन्हे हाथ में आ गया है। तुम दोनों पति-पत्नी अपनी आत्मा से पूछकर देखो तो तुम्हें क्या जबाब मिलता है ? क्या सेठ जी वास्तव में तुम्हारी दुर्घटना के जिम्मेवार हैं ? क्या वे चाहते थे कि तुम उनकी छत-ढलाई से गिर जाओ? दुर्भाग्यवश अपनी गफलत से तुम गिरे। सेठ जी की तो सदाशयता है कि वे अपने खर्चे पर तुम्हारा इतना अच्छा इलाज करा रहे हैं। कोई दूसरा होता तो छोड़ देता। तुम्हारे मन में जो है, साफ साफ कह दो, तुम्हें और क्या चाहिए? सेठ जी तुम्हें हर तरह की मदद करेंगे वे आदमी नहीं देवता हैं। तुम्हारा भाग्य ठीक था कि तुम उनके काम से गिरे। अब सीधे-सीधे सबको बता दो कि तुम्हारे मामले में सेठ जी का कोई कसूर नहीं ! कह दो कि सेठ जी से तुम्हारी कोई शिकायत नहीं ! इस फिजूल के बखेड़े और उत्पात को रोक दो।" [4] इसके माध्यम से मिथिलेश्वर जी ने यह बयान किया है कि यह नेता लोग किस प्रकार गांव के भोले-भाले लोगों को अपने चंगुल में फसाते है।

इसी प्रकार की उदाहरण सर्वेश्वर जी के काव्य में देखने को मिलती है। उनका कहना है कि इन नेताओं द्वारा मंच पर लोगों के साथ बड़े-बड़े वायदे किए जाते है परंतु अपना स्वार्थ निकाल लेने के बाद यह नेता लोग जनता के साथ किए हुए उन वायदों को भूल क्यों जाते है परंतु बाद में उसी मंच से जबाब क्यों गायब हो जाते है।

"किसी सूखाग्रस्त गांव के कुत्ते की तरह

सिवान पर दम तोड़ता

मिलता है हर सवाल

जहां लिखा है-

यह जगह आपकी है, कृपया इसे गंदा न कीजिए। "[5]

इसी प्रकार मिथिलेश्वर कृत उपन्यास में भी ऐसा दिखाया गया है कि किस प्रकार यह नेता लोग सत्ता पर विराजमान होते ही सब किए हुए वायदों को भूल जाते है। जब माघ का महीना आता है तो बड़टोली और नन्हटोली में लोकसभा चुनाव का समय होता है दोनों क्षेत्रों के पढे-लिखे लोगों ने अपनी-अपनी टोली को समझा दिया जो इस प्रकार है- नन्हटोली के पढे-लिखे लोगों द्वारा अपनी सारी टोली को इस प्रकार समझाया गया-"हम लगातार छले जाते रहे। सब गरीबों के पक्ष की और पिछड़ों के हित की बात करके ही हमारा मत ले जाते रहे है, बाकिर सत्ता के सिंहासन पर विराजते ही सब भूल गए। अपनी जमात के लोगों, अपने कुल-खानदान और हित-मित्रों को छोड़कर किसी गरीब और पिछड़े की उन्होने कहां खोज-खबर की? हम तो सिर्फ चुनाव के वक्त ही उन्हें याद आते हैं। इस बार हमें भी किसी दल या नेता की महानता पर नहीं जाना है। अपने वर्ग और समाज के व्यक्ति को ही जिताना है। वह चाहे जिस दल का हो ? चाहे पढ़ा-लिखा हो या न हो? हमारा मत उसी के खाते में जाना चाहिए। अपने समाज का व्यक्ति जो भी करेगा वह हमारे हक में जाएगा। हमारे हक की सही लड़ाई वही लड़ सकेगा, दूसरे वर्ग और समाज का व्यक्ति नहीं। एक से एक महान नेताओं को अपना मत देकर हमने देख लिया, बाकिर हम जहां पहले थे,आज भी वहीं है। हम जैसे अपने समाज का संगठन बनाकर बड़टोली से लोहा ले लेते है, वैसे ही हमारा आदमी भी जब सरकार में जाएगा तभी हमारी स्थिति बदलेगी।"[6]

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित भ्रष्टाचार के विकराल स्वरूप का वर्णन :

भ्रष्टाचार एक ऐसी बुराई है जिसने समाज की जड़ तक को खोखला करके रख दिया है। भ्रष्टाचार अर्थात भ्रष्ट+आचार। भ्रष्ट यानी बुरा या बिगड़ा हुआ तथा आचार का मतलब है आचरण। अर्थात भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है वह आचरण जो किसी भी प्रकार से अनैतिक और अनुसूचित हो। हमारे भारत जैसे देश को विशाल देश के नाम से जाना जाता है। परंतु भारत जैसे महान देश में भ्रष्टाचार इतना बढ़ गया है कि इस समस्या की जड़ को उखेड़ना बहुत ही कठिन है। छोटे से लेकर बड़े व्यक्ति तक सब लोग भ्रष्ट हो गए है। आम जनता इस भ्रष्टाचार की चक्की में पिसती जा रही है। हमारे भारत जैसे देश में सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार राजनीति के क्षेत्र में देखने को मिलता है। आज के समय में नेता लोग इतने भ्रष्ट हो गये है कि वह आम व्यक्ति की पुकार को अनसुना कर देते है। आम व्यक्ति इस बुराई का

ज्यादा शिकार हो रहा है। गरीब व्यक्ति की बात को तो यह नेता लोग सुनते तक नहीं है। गरीब व्यक्ति चाह कर भी इन बड़े लोगों पर कोई कार्यवाही नहीं करवा सकता अगर वो ऐसा कुछ कर भी देते है तो उनको इन नेताओं द्वारा प्रताड़ित किया जाता है। आम जनता इन बड़े लोगों के विरुद्ध चाह कर भी आवाज़ नही उठा सकते। यह सरकारी नेता लोग इस लिए इतने उच्च पदों पर नियुक्त किए जाते है ताकि यह आम जनता के लोगो के लिए कोई भलाई का काम कर सके। परंतु यह नेता लोग उनकी भलाई करने की जगह उनका खून पीते जा रहे है।

हिन्दी साहित्य में बहुत से साहित्यकार हुए है जिन्होने आर्थिक संघर्ष के अंतर्गत इस भ्रष्टाचार की समस्या को अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। आधुनिक साहित्यकार मिथिलेश्वर ने भी अपने उपन्यास 'यह अंत नहीं' में भी भ्रष्टाचार जैसी बहुत सी गंभीर समस्याओं को अपने साहित्य के माध्यम से उसको लेखनी का रूप देकर उसको जनता के समक्ष प्रस्तुत किया है। उदाहरण इस प्रकार है-

जब बड़टोली और नन्हटोली में लोकसभा के मत का समय आता हैं तो दोनों क्षेत्रों के लोगों ने दो-दो उम्मीदवारों को खड़ा कर दिया तथा अपने वर्ग के लोगों में कर्मठता और योग्यता के आधार पर भी सहमत नहीं हुए-"इसकी क्या गारंटी कि पढ़ा-लिखा और योग्य दिखने वाला उम्मीदवार ही हमारे लिए सहायक होगा? ये पढ़े-लिखे और योग्य दिखने वाले उम्मीदवार ही ज्यादा भ्रष्ट होते हैं। सत्ता-सुख में ये जल्दी बदल जाते हैं, अनपढ़, गंवार उतनी जल्दी नहीं बदलता। अपने लोगों का सच्चा हमदर्द वही बनता है ! "[7]

इसी प्रकार की एक उदाहरण सर्वेश्वर जी ने अपने काव्य में से दी है उनका कहना है कि केवल जो सत्ता पक्ष के नेता है वो ही नहीं भ्रष्ट नहीं है बल्कि आज के समय में सभी दलों के नेता भ्रष्ट होते जा रहे है। आज के नेता इतने स्वार्थी बन कर रह गए है कि उनको अपने काम से ही मतलब है। इसी कारण आज के समय में भ्रष्टाचार बहुत ही तेज गति से बढ़ता जा रहा है। आज के समय में यह इतना बढ़ गया है कि इसकी गहरी खाई से निकलना बहुत ही मुश्किल हो गया है। वे लिखते है-

"कितने भी जंगल साफ करते जाओ

और रास्ता बनाते जाओ

मील के पत्थरों की जगह

लगाते जाओ दलों की टोपियां

पर कोई रास्ता कहीं नहीं ले जाता।"[8]

मिथिलेश्वर ने अपने उपन्यास 'यह अंत नहीं' में भ्रष्ट नेताओं का वर्णन किया है। यह नेता चुनाव के दिनों में ही अपना स्वार्थ निकालने में जुटे होते है। जब बड़टोली में लोकसभा के चुनाव का समय आता है तो बड़टोली के चतुर लोगों ने इस क्षेत्र से खड़े होने वाले संभावित उम्मीदवारों की घोषणा होने और उनकी भाषणबाजी से अपनी टोली के बहकने से पूर्व ही बरगद के पास अपनी जुटान कर यह तय कर लिया-"इस बार हमें किसी दल की अच्छाई-बुराई पर नहीं जाना। उम्मीदवारों की काबिलियत से भी हमें कोई मतलब नहीं रखना। अगर हमारी बड़ी जाति का कोई आदमी खड़ा होता है तो बस आँख मूँदकर हमें उसे ही विजयी बनाना है। अपना आदमी चाहे कैसा भी होगा, सरकार में जाने पर अपनों के पक्ष में ही लड़ेगा। अब समय अपनों की पहचान और अपनों की सहायता का है। वक्त-जरूरत हमारे लिए वही उपयोगी होगा। अब किसी के बहकावे में हमें नहीं आना ! अपना, अपना हों होता और गैर, गैर ही ! "[9]

संदर्भ सूची

1. डॉ. ओमप्रकाश गाबा, राजनीति विज्ञानकोश,पृ.-294

2. डॉ. ओमप्रकाश गाबा, राजनीति विज्ञानकोश,पृ.- 227-228

3. रामचंद्र वर्मा (सं.), मानक हिन्दी कोश, पृ.- 64

4. मिथिलेश्वर,'यह अंत नहीं', पृ॰-168

5. सर्वेश्वर, कुआनो नदी, पृ॰-53-54

6. मिथिलेश्वर,'यह अंत नहीं', पृ॰-257

7. मिथिलेश्वर,'यह अंत नहीं', पृ॰-258

8. सर्वेश्वर, कविताएं-दो, पृ॰ 93

9. मिथिलेश्वर,'यह अंत नहीं', पृ॰-257

अध्याय पाँच

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित धार्मिक संघर्ष

धार्मिक संघर्ष पर विचार करने से पूर्व धर्म के अर्थ को स्पष्ट करना अति अनिवार्य है। विभिन्न विद्वानों ने धर्म के विषय में भिन्न-भिन्न परिभाषाएं व्यक्त की है जो इस प्रकार है:

धर्म से अभिप्राय 'धारण करने से' रहा है। अर्थात जिन तत्वों को मनुष्य अपने और समाज के विकास के लिए ग्रहण करता है, वही 'धर्म' है। धर्म का भारतीय समाज में प्रमुख स्थान रहा है। धर्म को व्यक्ति के उचित-अनुचित, अच्छे-बुरे कार्यो के निर्धारक रूप में स्वीकृत किया जाता है। धर्म मुख्य रूप से ईश्वर के प्रति जुड़ा भाव है। धर्म का आधार भय, भक्ति तथा पवित्रता की धारणा है। धर्म की अभिव्यक्ति पूजा-पाठ, आराधना द्वारा होती है। धर्म को इस लोक से उस लोक (परलोक) की ओर ले जाने वाला माना गया है। भारत में धर्म की विस्तृत व्याख्या करते हुए उसे व्यक्तिगत (ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, ब्रह्मचारी, गृहस्थ, बानप्रस्थ, सन्यास) और सार्वजनिक अच्छे गुण दोनों रूपों में अपनाने को कहा गया है। धर्म जीवन जीने की एक विशेष पद्धति है। बाद में यह हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि विभिन्न धर्मो के रूप में माना जाने लगा। आधुनिक समय में धर्म का बोलबाला काफी बढ़ गया है। लोग धर्म के आधार पर ही एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करने लग गये है। एक धर्म के लोग दूसरे धर्म के लोगों से घृणा करते है। प्राचीन समय में भी धर्म के नाम पर काफी संघर्ष हुए है। मुसलमान लोग जबरदस्ती हिन्दू लोगों को धर्म परिवर्तित करवा रहे थे। उनको हिन्दुओं से मुसलमान बनाया जा रहा था। इसको ले कर भी हिन्दू जनता ने काफी संघर्ष किये।

डॉ. शरद पगारे के अनुसार,"सामान्यतया: धर्म का अर्थ धारण करना है। अर्थात सत्कर्म की धारणा करके उसका निर्वहन करना ही सच्चा धर्म है। धर्म, न्याय, नैतिकता, सदाचार, सत्य, सुकर्म आदि सद्गुणों का समूह है। अन्याय, अनैतिकता, कदाचार, असत्य, कुकर्म आदि अधर्म है। अधर्म धर्म का विरोधी है। व्याकरण के अनुसार धर्म 'धृ' (धारणे) धातु में मन प्रत्यय लगाने से बनता है, इसका सीधा अर्थ 'धारणा' करना है। ऋग्वेद संहिता में 'धर्म' को किसी वस्तु या व्यक्ति की स्थाई वृति, प्रकृति या स्वभाव मात्र माना गया है। सत्य और धर्म का गहरा सम्बन्ध है, पर वह सत्य विश्वास ही नहीं, वरन सदाचारमय जीवन भी है। सच्चा धर्मानुयायी अन्यों के विश्वास की चिन्ता नहीं करता। धर्म केवल बाहरी सदाचारमय

आचरण पर ही आधारित नहीं है। विचार और आचरण के साथ ही साथ उसमें आत्मिक प्रेरणा का होना भी आवश्यक है। परंतु अब तक धर्म का उपयोग ज्ञान और नैतिक गुण के अनुशासन के विकास हेतु ही किया गया।"[1]

डॉ. रामप्रसाद मिश्र के अनुसार,"धर्म वह तत्व है जो शाश्वत मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करते हुए समाज को सुव्यवस्थित रखता है।"[2]

डॉ. राधाकृष्ण के अनुसार,"धर्म वह अनुशासन है जो अंतरात्माओं को स्पर्श करता है और हमें बुराई से संघर्ष करने में सहायता देता है, काम, क्रोध और लोभ से हमारी रक्षा करता है, नैतिक बल को उन्मुक्त करता है, संसार को बचाने के महान कार्य के लिए साहस प्रदान करता है।"[3]

धर्म अपनी विरोधी शक्तियों का सामना करते हुए जनसमुदाय के नैतिक, भौतिक, आध्यात्मिक आदि सभी पहलुओं का विकास करता है, सबकी भलाई, सुख, शांति का वातावरण तैयार करता है। इससे सभी को स्वतन्त्रता और मुक्ति प्राप्त होती है। धर्म का वास्तविक अर्थ है मानव की आत्मा को गौरव प्रदान करना। धर्म मानव के शाश्वत जीवन में मानवीय मूल्यों की स्थापना करके समाज में सुव्यवस्था उत्पन्न करता है। यह नैतिकता को सबलता प्रदान करता है तथा संसार की रक्षा हेतु प्रोत्साहित करता है।

धार्मिक संघर्ष की परिभाषा :

धार्मिक संघर्ष को स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है कि संसार में सदैव ही अच्छाई-बुराई, पाप-पुण्य, सुकृत्य, कुकृत्य, सदाचार-दुराचार, चरित्र-अचरित्र, नैतिक-अनैतिक, सत्य-असत्य, देवी-आसुरी शक्तियों में हमेशा ही परस्पर विरोध या टकराव होता रहता है। इसी धर्म-अधर्म की लड़ाई को धार्मिक संघर्ष के नाम से अभिहित किया जाता है।

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित अंधविश्वास की शृखलाओं का वर्णन:

अंधविश्वास एक सामाजिक समस्या है। भारत के लोग प्राचीन समय से ही इन घोर अंधविश्वासों में डूबे हुए है। हमारा मानना है कि अशिक्षित लोग ही इन अंधविश्वासों में विश्वास करते है परंतु ऐसा बिल्कुल नहीं है। आधुनिक युग में जैसे-जैसे समय व्यतीत होता जा रहा है वैसे-वैसे ही पढ़े-लिखे लोग इन अंधविश्वासों में ज्यादा विश्वास करने

लग पड़े है। ग्रामीण समाज धार्मिक अंधविश्वास और रूढ़ियों से ग्रस्त है, पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं ज्यादा अशिक्षित है और बाल-विवाह अभी भी हो रहे है, जिससे युवा पीढ़ी बर्बाद हो रही है। हिन्दी साहित्य में बहुत से साहित्यकार हुए है जिन्होने इन पर अपनी कलम चलाई है। उनमे से मिथिलेश्वर भी एक है जिन्होने अपने साहित्य के माध्यम से इनका वर्णन किया है। 'यह अंत नहीं' के माध्यम से इसका वर्णन इस प्रकार है- जब श्री वास्तव जी की पत्नी अपनी पड़ोसिनों की देखा-देखी अपने पति से गंगा-स्नान की इच्छा प्रकट रही होती तो चुनिया और जोखन को ऐसी स्थिति में उनके घर रहना पड़ता ऐसा आगे भी दो-तीन बार हो चुका था जब अपनी जरूरियात के दौरान श्रीवास्तव जी दोनों पति-पत्नी को कहीं जाना पड़ता था तो उनके बच्चों की देखभाल और घर की अगोरिया के लिए चुनिया और जोखन को ही उनके यहां ठहरना पड़ता था। लेकिन श्रीवास्तव जी ने पत्नी को समझा दिया था -"इस धर्म धक्के में जाना ठीक नहीं होगा। बक्सर न जाकर घर पर ही स्नान-ध्यान कर ले मन चंगा तो कठौती में गंगा। अगर वहां जाने और गंगा स्नान से ही लोग पुण्यात्मा हो जाते तो तीर्थों में रहने वाले सभी चोर और गंगा के किनारे बीएसई मल्लाह एसबी पुण्यात्मा बन जाते। पर ऐसा नहीं यह अपने मन का भ्रम और अंधविश्वास है। जीतने भ्रष्टाचार और जैसा कुकर्म ऐसे स्थलों पर होता है, वैसा कहीं नहीं होता। उस भीड़ में कितनों की गठरी-मुटरी चोरी जाएगी, कितनी स्त्रियों के साथ बलात्कार होगा, कितनों के बच्चे गंगा में डूब मरेंगे,बसों और ट्रेनों की धक्का-मुक्की में कितनों की जानें जाएंगी, कहना मुश्किल है। ऐसे अवसरों पर मरते एक सौ हैं तो पीटीए सिर्फ दस-बीस का ही चलता है ! ऐसी असुरक्षित जगह पर सिर्फ अपने मन के वहम वश इतना जोखिम उठाकर जाने से कोई फायदा नहीं। अगर गंगा में नहाना और तीर्थों में घूमना ही है तो अन्य दिनों में हम ऐसा कर लेगें। ऐसा नहीं है कि आज कि गंगा कल बदल जाएगी या आज के तीर्थ कल दूसरे को जाएंगे, यह सिर्फ हमारी समझ का अंतर है। अंधविश्वास की भीड़ है। भेड़िया धंसान है।" [4] इसी प्रकार की एक उदाहरण "बीजारोपण" कहानी में धरीछन कि गर्भवती पत्नी कि मृत्यु होने पर धरीछन से कहा जाता है कि वह शव के हाथ-पांव में किले ठोकें, नहीं तो वह प्रेत बनकर लोगों को कष्ट देगी। धरीछन ने इस अंधविश्वास को न मानकर प्रिय पत्नी के शव के साथ क्रूरता दिखने से इंकार कर देता है। बाद में बिहारी यादव कि भैंस मार जाने पर धरीछन कि पत्नी के प्रेत को ही जिम्मेदार माना जाता है। धरीछन अपनी पत्नी कि फोटो निहारता रहता है, तो गांव वाले कहते है कि-"उसने अपने पत्नी को "इष्ट" बना लिया है, वह उस पर सवार होकर किसी को भी तंग करती है।"[5] इससे तंग होकर धरीछन गांव छोड़कर चला जाता है।

मिथिलेश्वर कृत उपन्यास 'यह अंत नहीं' में अभिव्यंजित प्राचीन परंपराओं का स्वरूप:

आज के समय में भी लोग पुराने समय से चली आ रही परंपराओं को किसी न किसी रूप में उनका इस्तेमाल करते है उनका यह मानना है कि यह परंपराएं हमें हमारे पूर्वजों के द्वारा विरासत में मिली है। लोग इनको याद रख कर ही आज सभी देवी-देवताओं कि पुजा आराधना करते है। बहुत से साहित्यकार ऐसे हुए है जिन्होने इनको माध्यम बना कर अपने साहित्य का सृजन किया है। मिथिलेश्वर जी ने भी अपने उपन्यास में इंका वर्णन इस प्रकार किया है-

जब चुनिया का बबुआ पानी में डूब जाता है तो वह उसकी आंखे बंद हो जाती है तो इस पर गांव के सभी लोग अपने-अपने इष्ट देवता को याद करते है-"यह नादान बुतरु है। अइसे पानी नहीं फेंकेगे। इसे चाक पर चढ़ाकर घुमाने की जरूरत है ! " उस राय के अनुसार,बालक को गोद में लेकर जोखन गांव की और भागा। चुनिया भी अपने बच्चे के पीछे रोती-बिलखती भागी -"हमारे बबुआ को बचा लो सुरुज बाबा हे काली माई हे डिहवार बाबा हे बजरंग बली चाहे तो बबुआ के बदले हमको उठा लो,बाकिर हमारे बबुआ को जिआ दो। "[6]

इसी प्रकार की उदाहरण 'विरासत' कहानी में अंधविश्वासों के विरासत की बात कहीं गयी है, जो गांव की पहली पीढ़ी, दूसरी पीढ़ी को सौपती चली जाती है। कहानी में ओझा झकड़ बाबा के कारनामे को उजागर किया गया है। बीमार औरतों को वे प्रेत बाधा का शिकार बता मार-पीट से भूत भगाने का दावा करते है। अपना महत्व बढ़ाने के लिए बाबा खुद ही टोना-टोटका कर देते है और सुबह लोगों के भय को दूर करने के लिए नाटक करते हुए कहते है- "रात में ही मेरा इष्ट मुझसे कह गया था कि आपके पूरे गांव को खत्म करने के लिए एक डायन बीचवाली गली में जोग-टोना कर रही है।" [7]

संदर्भ सूची ;

1. डॉ. शरद पगारे, पूर्व मध्ययुगीन धार्मिक आस्थाएं, एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण,पृ॰-35-36

2. डॉ. रामप्रसाद मिश्र, हिन्दू धर्म, पृ॰-4

3. डॉ. राधाकृष्णन, धर्म और समाज, पृ॰-109

4.मिथिलेश्वर,'यह अंत नहीं',पृ॰- 266

5. मिथिलेश्वर,'बीजारोपण' ,पृ॰- 187

6. मिथिलेश्वर,'यह अंत नहीं',पृ॰- 221

7. मिथिलेश्वर, माटी की महक धरती गांव की, 'विरासत में', पृ॰-54

उपसंहार

मिथिलेश्वर जी हिन्दी साहित्य में बहुत ही सशक्त साहित्यकार हुए है। इन्होने अपनी रचनाओं के माध्यम से गांव के यथार्थवादी रूप का वर्णन बहुत ही सुंदर ढंग से किया है। मिथिलेश्वर जी का जन्म एक गांव में ही हुआ। इन्होने अपने साहित्य के माध्यम से गांव की जो भी समस्या है उनको अंकित किया है। उन्होने शोषित वर्ग पर होने वाले अत्याचार, नारी की दयनीय दशा, मज़दूरों पर होने वाला शोषण उसका वर्णन किया है।

प्रस्तुत शोध कार्य को पांच अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में 'सैद्धांतिक पृष्ठभूमि' में शोध कार्य का समस्या कथन, समस्या औचित्य, उद्देश्य, परिकल्पना, प्रयुक्त होने वाली प्रविधियों के साथ – साथ पूर्व साहित्यावलोकन पर भी प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही सिद्धांत का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, प्रकार तथा मिथिलेश्वर जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। इसके पश्चात इनके उपन्यास के माध्यम से समाज में जो पारिवारिक स्थिति है कि किस प्रकार आज परिवारों में आपसी प्यार खत्म होते जा रहे है, किस प्रकार उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग के लोगो का शोषण करते है, तथा समाज में नारी कि स्थिति कितनी दयनीय है उसका वर्णन किया गया है मिथिलेश्वर जी ने समाज में जो भी विसंगतियां चल रही थी उनको बहुत ही नजदीक से देखा। इन्होने आर्थिक संघर्ष के कारण पैदा होने वाली समस्याओं जैसे कि – गरीबी, बेरोजगारी, लूटपाट आदि का भी वर्णन किया है। इसके इलावा रजनेताओं की अवसरवादी नीतियों तथा भ्रष्ट नीतियों का वर्णन भी किया है। इनका मानना है कि नेता लोग लोगों से जो बड़े-बड़े वायदे करते है अपना स्वार्थ पूरा हो जाने के बाद उन वायदों को भूल क्यो जाते है। इस प्रकार जनता कि सारी उम्मीदों पर पानी फिर जाता है। धार्मिक संघर्ष के अंतर्गत लोग आज भी पुराने रीति-रिवाज़ों, प्राचीन परम्पराओं, अंधविश्वासों में बुरी तरह से फसे हुए है। मिथिलेश्वर जी ने इन सभी समस्याओं का हल बहुत ही सुंदर ढंग से किया है। समाज में जितनी भी कुरीतियां चल रही है उनको दूर करने के लिए मिथिलेश्वर जी ने बहुत ही उपाय निकाले है। इसके द्वारा इन्होने गांव के लोगों में जागृति लाने का प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार- ग्रंथ

1. मिथिलेश्वर,"यह अंत नहीं",नयी दिल्ली,किताबघर प्रकाशन,2000.

सहायक- ग्रंथ

1. कुंवरपाल, "मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र और हिन्दी उपन्यास",दिल्ली, 2005".

2. मिश्र, शिव कुमार, "मार्क्सवाद और साहित्य", नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2001.

3. सिंह, ओमप्रकाश, "प्रेमचंदोत्तर कथासाहित्य और सांप्रदायिक समस्याएं", नई दिल्ली, नमन प्रकाशन, 1998.

4. मार्क्स, एंगेल्स, "कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र", मास्को, प्रगति प्रकाशन, 1986.

5. सिंह, अयोध्या, "समाजवाद – भारतीय जनता का संघर्ष", कलकता, लोकभारती प्रकाशन,1971.

6.राय, आशुतोष, "नागार्जुन का गद्य साहित्य", दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन, अप्रैल 20, 2006.

7. जेतली, ममता तथा श्री प्रकाश शर्मा, "आधी आबादी का संघर्ष", नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन , 2006.

8. देवी, महाश्वेता, "अग्निगर्भ", दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, मार्च 12, 2005.

9. कुमार, राधा, "स्त्री संघर्ष का इतिहास", नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन,1800-1900.

10. शर्मा, सोहन, "भारतीय समाज में वर्ग संघर्ष और हिन्दी उपन्यास" दिल्ली, रचना प्रकाशन, 2011.

11. खैरनार, राजेन्द्र , "हिन्दी उपन्यास वर्ग एवं वर्ण संघर्ष", कलकत्ता, लोकभारती प्रकाशन 2014.

12. इंगले, जालिन्दर, "समकालीन हिन्दी उपन्यास वर्ग संघर्ष", दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2007.

13. शर्मा, केशवदेव, "आधुनिक हिन्दी उपन्यास और वर्ग संघर्ष", नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, ,1991.

शोध ग्रंथ

1. पाल, जतीन्द्रा, "सर्वेश्वर के काव्य में संघर्ष चेतना", महारिशी दयानंद यूनिवर्सिटी, पी.एच.डी. थीसिस, 2009, प्रिंट.

2. तौमर, तेजराम, "प्रसाद के नाटकों में संघर्ष", महारिशी दयानंद यूनिवर्सिटी, पी.एच.डी थीसिस, 1995, प्रिंट.

3. सिन्हा, संध्या, "निराला के काव्य में राजनीतिक संघर्ष", जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी, पी.एच.डी थीसिस, 1991, प्रिंट.

4. सिंह, आलोक कुमार, "प्रगतिवादी आलोचना का अन्तः संघर्ष-1936-1966", अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, पी.एच.डी थीसिस, 2002, प्रिंट.

5. विमल खंडेकर," स्वतंत्रतोतर हिंदी और मराठी उपन्यासों में वर्गीय एवं जातीय संघर्ष",

पी. एच. डी. की उपाधि के लिए, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, 1999

6. सुनीता, "प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी की संघर्ष यात्रा", पी. एच. डी. की उपाधि के लिए, shri jagdishprasad jhabarmal tibarewala university, 2012 .

7. इंगले, जलेन्द्र, "समकालीन हिन्दी उपन्यासों में वर्ग एवं वर्ण संघर्ष', डॉ. बाबा साहिब अंबेडकर मराठाबाद यूनिवर्सिटी, पी.एच.डी. थीसिस, 2007, प्रिंट.

शब्द कोश

1. प्रसाद, बलभद्र, “मानक अँग्रेजी हिन्दी कोश”, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1976.

2. मोहन, ब्रज, “मीनाक्षी हिन्दी अँग्रेजी कोश”, इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, 1956.

3. मुकुंदीलाल, श्री वास्तव, “बृहत हिन्दी कोश”, 1953.

4. वर्मा, रामचंद्र, “मानक हिन्दी कोश”, पांचवा खंड, 1964.

5. शास्त्री, शिवप्रसाद, “अशोक मानक विशाल हिन्दी कोश”, 1929.